मासिक पत्रिका

मान मन्दिर बरसाना

अप्रैल २०२० वर्ष ४, अंक ४

मूल्य १० /-

"मानमन्दिर कला अकादमी" की प्रस्तुती
नाटिका- 'मीराबाई' के दृश्य

"मानमन्दिर कला अकादमी" की प्रस्तुती

नाटिका- 'मीराबाई' के दृश्य

अनुक्रमणिका

विषय-सूची	पृष्ठ- संख्या
१ भारत का गौरव 'श्यामलक्ष्मी गौ-चिकित्सालय'	०३
२ ब्रजलीला में विभिन्न गोपियों के यूथ	०५
३ भक्ति का प्रवेश द्वार 'समत्वभाव'	०७
४ भक्ति का बीज 'भगवन्नाम'	११
५ विशुद्ध प्रेममयी 'ब्रजभूमि'	१४
६ सबसे सरस साधन 'लीलागान'	१८
७ कामविजयीलीला 'महारास'	२१
८ भगवत्प्रेम-भाजक 'श्रीमाधवदासजी'	२४
९ एकमात्र सशक्त शक्ति 'भक्ति'	२८
१० अभयदायक 'गीता-ज्ञान'	३२

तेरा ही द्वार सच्चा दीनों का द्वार है

तेरा ही द्वार सच्चा दीनों का द्वार है।
राधा कृपा दया की तू ही आधार है॥
कोमल हृदय तेरा है, जो प्रेम से भरा है,
विनती हमारी सुन ले, करुणा पुकार है॥
सबने मुझे गिराया, तेरे ही द्वार आया,
तेरा ही है सहारा, सब की तू सार है॥
तू ही है प्रेम देवी, तू प्रेम की प्रदाता,
तुझसे ही प्रेम प्रगटा, ब्रज में प्रसार है॥

— पूज्यश्री बाबा महाराज कृत

॥ राधे किशोरी दया करो ॥

हमसे दीन न कोई जग में,
बान दया की तनक ढरो।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा,
यह विश्वास जो मनहि खरो।
विषम विषयविष ज्वालमाल में,
विविध ताप तापनि जु जरो।
दीनन हित अवतरी जगत में,
दीनपालिनी हिय विचरो।
दास तुम्हारो आस और की,
हरो विमुख गति को झगरो।
कबहूँ तो करुणा करोगी श्यामा,
यही आस ते द्वार पर्यो।

— पूज्यश्री बाबा महाराज कृत

संरक्षक- श्रीराधामानबिहारीलाल

प्रकाशक – राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर सेवा संस्थान,

गह्वरवन बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)

(Website :www.maanmandir.org)

(E-mail :ms@maanmandir.org)

mob. : 9927338666, 9837679558

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ८:०० से ९:०० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ७:३० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं।

परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान –

"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले।"

*** योजना ***

अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकाले व मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवा द्रव्य किसी विश्वसनीय गौ सेवा प्रकल्प को दान कर गौ-रक्षा कार्य में सहभागी बन अनंत पुण्य का लाभ लें। हिन्दू शास्त्रों में अंश मात्र गौ सेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है।

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें। हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है –

सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ। जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि॥ (श्रीमद्भागवत३/७/४१)

अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंशके बराबर भी नहीं हो सकता।

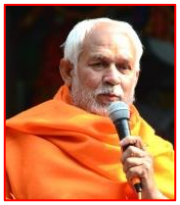

प्रकाशकीय

सेवक स्वामी से कभी कुछ चाहता नहीं है, यदि वह चाहता है तो सेवक नहीं बल्कि एक व्यापारी है | सेवक भाव सहसा आता नहीं है | जीव के हजारों जन्म व्यतीत हो जाते हैं परन्तु वह फिर भी दासभाव से वंचित ही रहता है | दासभाव की बड़ी महिमा है | दासभाव के बिना कुछ भी नहीं मिलता –

दया दीनता दास भाव बिन, मिले न कुँवर कन्हाई |

बड़े-बड़े सभी भक्तों ने दासत्व के महत्व का प्रतिपादन किया है तभी तो मीराजी कहती हैं –

स्याम म्हाने चाकर राखो जी |

दासकी अपनी स्वतंत्र कोई इच्छा नहीं रहती | श्रीमीराबाईजी का गिरिधारीलाल में अनन्य प्रेम था, इसलिए उनके सर्वात्मसमर्पितभाव की सहज वाणी पदों में मिलती है –

जहाँ बिठावै तित ही बैठूँ, बेचै तो बिक जाऊँ |
जो पहिरावै सोई पहिरूँ, जो दे दे सोई खाऊँ ||

पराधीनता सेवक का भूषण है, वह स्वामी की इच्छा में ही सन्तुष्ट रहता है | सच्चा सेवक भगवान् को अत्यंत प्रिय होता है | रामहि सेवक परम पियारा | भगवान् को प्रसन्न करने का सबसे उत्तम मार्ग यही है कि उसमें सेवाभाव आ जाए | आज लोग सेवा तो करते हैं परन्तु बनना चाहते हैं स्वामी | सोचते हैं- "मैं जैसा चाहूँ; वैसा ही गुरुदेव करें" यह सेवाभाव नहीं हो सकता | अहंकारी प्राणी कभी सेवक नहीं बन सकता | जो गधे तक को नतमस्तक होता है वही वास्तविक सेवक है –

सियाराममय सब जग जानी |
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ||

(श्रीरामचरितमानस,बालकाण्ड-७)

प्रबन्धक
राधाकांत शास्त्री
श्री मान मन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

भारत का गौरव 'श्यामलक्ष्मी गौ-चिकित्सालय'

- योगी आदित्यनाथजी (मुख्यमंत्री, उत्तरप्रदेश सरकार)

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- बालव्यासाचार्या साध्वी श्रीजी जी, मानमन्दिर, बरसाना

बरसाने की रंगीली होली के अवसर पर दिनांक ३/३/२०२० को उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी गौशाला श्रीमाताजी गौशाला, जो अपने में अद्वितीय है, जिसमें ५५००० से अधिक गोवंश मातृवत पालित है और जहाँ पर्यावरण संरक्षण से लेकर विविध गो-उत्पादों के माध्यम से प्राणीमात्र के हित-चिन्तन की भूमिका गढ़ी जाती है | यहाँ ऑर्गनिक (जैविक) कृषि को बढ़ावा देने का कार्य चल रहा है | प्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ, जिन्होंने सन् २०१८ में भी यहाँ आकर गोबर गैस प्लांट का उद्घाटन किया था, पुनः उनका आगमन हुआ और भारतवर्ष में अपने ढंग का अत्याधुनिक अस्पताल श्रीमाताजी गोशाला में बनाया गया है, उसका लोकार्पण किया | यह अस्पताल गोवंश के लिए परम हितकारक होगा क्योंकि इसमें सभी मानवोचित सुविधाएँ उपलब्ध हैं जो गायों को प्रदान की जाएँगी | कोलकाता निवासी व्यापारी श्रीमहावीरजी एवं उनके सहयोगियों द्वारा १५ करोड़ की राशि से निर्मित हुआ है | मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी दोपहर लगभग १ बजे श्रीमाताजी गोशाला पधारे और मान मन्दिर सेवा संस्थान की बाल साध्वियों ने उनकी आरती उतारकर स्वागत करते हुए उन्हें गुलाल भी लगाया | गोशाला में गोपूजन व गो दर्शन से आह्लादित योगी आदित्यनाथ ने गो अस्पताल का उद्घाटन किया | अस्पताल के ऑपरेशन कक्ष सहित समस्त सुविधास्थलों का निरीक्षण किया | इस अवसर पर एक गोवंश का ऑपरेशन भी हुआ जिसके पेट से ७० किलो प्लास्टिक तथा कुछ लोहा भी निकाला गया | इसके पश्चात् एक सभा को भी उन्होंने सम्बोधित किया | इसके पूर्व गीता मनीषी महान संत श्री ज्ञानानंद जी एवं ब्रज के विरक्त संत श्री रमेश बाबा जी के साथ गोशाला के सन्दर्भ में विस्तृत वार्ता हुई | इस वार्ता में उद्योगपति श्री महावीर जी, हरीश भाई एवं राधाप्रियजी, ब्रजदासजी, ब्रजशरणजी तथा राधाकांत शास्त्री आदि सम्मिलित रहे | अपने सम्बोधन में मुख्य मंत्री श्रीयोगीजी ने श्रीमाताजी गोशाला के प्रबन्धन और श्रीरमेश बाबा के प्रयासों को खूब सराहा तथा अपने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया | इस अवसर पर प्रदेश के पशुपालन मंत्री श्री लक्ष्मी नारायणजी भी उपस्थित रहे | सभी ने गोशाला में ही प्रसाद पाया |

"गो-चिकित्सा प्रारम्भ होते ही
आश्चर्यजंक परिणाम सामने आये"

मान मन्दिर सेवा संस्थान की श्रीमाताजी गोशाला में १५ करोड़ की राशि से गोवंश की चिकित्सा के लिए भारत के सबसे बड़े गो चिकित्सालय का निर्माण किया गया है | बरसाने की रंगीली होली के शुभ अवसर पर उत्तर प्रदेश के परम गो भक्त यशस्वी मुख्य मंत्री श्रीआदित्य नाथ योगीजी के द्वारा इसका उद्घाटन किया गया और अब यह चिकित्सालय पूर्ण सेवा भाव और कर्मठता के साथ गोवंश की चिकित्सा में संलग्न है | हाल ही में इस अस्पताल में एक ऐसे सांड़ को मृत्यु के मुख में जाने से बचाया गया, जिसकी हालत बहुत दयनीय हो गयी थी | इस सांड़ का ऑपरेशन किया गया तो उसके पेट से १०० किलो पौलीथीन और १० किलो लोहा निकला | किसी ने उसके ऊपर तेजाब फेंक दिया था जिससे अंदर तक उसकी हड्डियाँ भी झुलस गयी थीं, इस चिकित्सालय के कुशल चिकित्सकों के द्वारा बेहतरीन मेडिकल सुविधाओं के साथ सांड़ का उपचार किया गया और इस तरह उसे नवजीवन मिल गया तथा अब वह पूर्ण स्वस्थ है | इसी प्रकार एक और चमत्कार यह हुआ कि एक अन्य सांड़ को यहाँ उपचार के लिए लाया गया, जिस पर बंदूक की गोली से आघात किया गया था तथा शरीर के कुछ हिस्सों

को फरसे से काट दिया गया था | उसका भी उत्कृष्ट विधि से इलाज किया गया और अब वह खतरे से बाहर व पूर्ण स्वस्थ है | यह राधारानी की कृपा है नहीं तो इतना बड़ा असम्भव कार्य कैसे हो सकता था | गोवंश की चिकित्सा के लिए इतना बड़ा अस्पताल दुनिया में कहीं नहीं है | पशुओं के उपचार के लिए यूरोप और अमेरिका में कई अस्पताल हैं लेकिन गायों की चिकित्सा के लिए कहीं ऐसा अस्पताल नहीं है | वहाँ के लोग तो गायों का माँस खाते हैं, ऐसे आसुरी प्रवत्ति के लोग गायों की सेवा भला कैसे कर सकते हैं, यह तो राधारानी की कृपा है जो बरसाने में गायों की सेवा और चिकित्सा के लिए भारत की सबसे बड़ी गोशाला और अस्पताल की स्थापना हुई है | विचित्र बात यह है कि इस गोशाला और अस्पताल में गोसेवा के लिए किसी से पैसा नहीं लिया जाता | यहाँ असंभव घटनाएँ संभव हो रही हैं, श्रीजी की कृपा का प्रत्यक्ष चमत्कार यहाँ दिखाई पड़ रहा है | मान मन्दिर के आराधना भवन रसमण्डप में जो निष्काम आराधना प्रतिदिन की जाती है जिसमें सवा सौ से अधिक साध्वियाँ (आराधिकाएँ) डेढ़ घंटे तक श्रीबाबामहाराज के पद गायन में श्रीराधामाधव को रिझाने के लिए नृत्य-आराधना करती हैं, उसी दिव्य आराधना का यह चमत्कार है जो माताजी गोशाला और यहाँ के चिकित्सालय में प्रतिदिन दिखाई दे रहा है |

☀ चरणों की शरण ☀

अपने इष्ट के चरणों से अनुराग करो।

भगवान् के चरणों की शरण में गये बिना किसी भी साधन से माया को नहीं जीता जा सकता, क्योंकि एक तो ये माया दुस्तर है, दूसरा हमारा साधन भी सीमित है। किन्तु यदि भगवान् की कृपा दृष्टि पड़ जाये तो निश्चित वहाँ से माया भाग जायेगी। भगवान् का स्वभाव है कि वो अपने आश्रित के दोष नहीं देखते और यदि उसमें थोड़ा-सा भी गुण होता है तो प्रभु उसी से रीझ जाते हैं।

तुम पापी हो, पुण्यात्मा हो, भले हो, बुरे हो, ये सब मत सोचो; ऐसा सोचना तुम्हें दुर्बल बना देगा। केवल प्रभु के चरणों का ध्यान करो, उनके चरणों के आश्रय से अनन्त पाप नष्ट हो जाते हैं। हमें सिर्फ इतना सोचना है कि हम उनके चरणों में कैसे जायें? महत्व भले या बुरे का नहीं है अपितु इस बात का है कि हम जैसे भी हैं प्रभु के हैं। इसी बात को सूरदास जी ने अपने पद में कहा कि –

जो हम भले बुरे सो तेरे ।
सब तजि तुम सरनागत आयौ, दृढ करि चरन गहेरे ॥

हम किसी और के नहीं हैं। हमको किसी और से लेना देना नहीं है। भगवान् का तो विरद है कि चाहे कोई सारे संसार का द्रोही है, सारे संसार का कत्ल करके आया है, तब भी उसे नहीं त्यागते।

ब्रजलीला में विभिन्न गोपियों के यूथ

रसीली ब्रजयात्रा भाग -१ से संग्रहीत

संकलनकर्ता एवं लेखक – व्यासाचार्य राधिकेशजी, मानमन्दिर, बरसाना

गोप्यस्तु श्रुतयो ज्ञेया ऋषिजा गोपकन्यकाः । देवकन्याश्च विप्रेन्द्र! न मानुष्यः कथञ्चन ॥

(पद्मपुराण)

गोपियों के शरीर प्राकृत नहीं थे और उनको मानुषी समझना ही अपराध है –

तमेव परमात्मानं जारबुद्ध्यापि सङ्गताः । जहुर्गुणमयं देहं सद्यः प्रक्षीणबन्धनाः ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/२९/११)

यद्यपि गोपियों का श्रीकृष्ण में जार भाव भी था किन्तु वस्तुशक्ति भाव की अपेक्षा नहीं रखती। गोपियों ने जिनसे प्रेम की चेष्टाएँ कीं, वे स्वयं भगवान् ही तो थे। इसलिए उन्होंने पाप-पुण्य रूप कर्म के परिणाम स्वरूप बने गुणमय शरीर का त्याग करके महारास के योग्य दिव्य चिन्मय देह प्राप्त कर लिया।

वेदनागक्रोशभूमिं स्वधाम्नः श्रीहरिः स्वयम् । गोवर्द्धनं च यमुनां प्रेषयामास भूपरि ॥

(गर्गसंहिता, गोलोकखण्ड ३/३३)

श्रुतरूपा ऋषिरूपा मैथिलाः कोशलास्तथा । अयोध्यापुरवासिन्यो यत्र सीतापुलिंदकाः ॥

(गर्गसंहिता, गोलोकखण्ड ४ /१६)

श्रीकृष्ण के साथ ही ८४ कोस ब्रज भूमि एवं गोलोक परिकर और गोपियों के विभिन्न यूथ भी ब्रज भूमि में युगल रस की प्राप्ति के लिए आए, जिनमें श्रुतियाँ, रामावतार के परिकर – जनकपुर की स्त्रियाँ, कौशल जनपद की स्त्रियाँ, अयोध्यावासिनी नारियाँ, यज्ञ सीताएँ, पंचवटी की भीलनियाँ, दण्डक वन के ऋषि-मुनि, जालंधर नगर की स्त्रियाँ, वैकुण्ठ की रमा सहचरियाँ, श्वेतद्वीप की सखियाँ, ऊर्ध्व वैकुण्ठ की देवियाँ, लोकालोक पर्वतवासिनी देवियाँ, सामुद्री लक्ष्मी की सखियाँ, यज्ञावतार से मोहित देवाङ्गनाएँ, धन्वन्तरि अवतार से मोहित औषधियाँ, मत्स्यावतार से मोहित सामुद्री कन्याएँ, पृथु मोहिता बर्हिष्मती पुरी की स्त्रियाँ, नर-नारायण वर से अप्सरागण, वामनावतार मोहिता सुतल लोक की स्त्रियाँ, शेष मोहिता नाग कन्याएँ आदि। श्रीधाम वृन्दावन में श्यामसुन्दर ने अपने मधुर रसाश्रयी भक्तों पर विशेष अनुग्रह करने के लिए सर्वलीला शिरोमणि दिव्य महारास क्रीड़ा सम्पन्न की, जिसमें गोपियों के अनेक यूथ उपस्थित हुए –

रमावैकुण्ठवासिन्यः श्वेतद्वीपसखीजनाः । ऊर्ध्वं वैकुण्ठवासिन्यस्तथाऽजितपदाश्रिताः ॥
श्रीलोकाचलवासिन्यः श्रीसख्योपि समुद्रजाः । ता गोप्योपि भविष्यन्ति लक्ष्मीपतिवराद् व्रजे ॥
काश्चिद्दिव्या अदिव्याश्च तथा त्रिगुणवृत्तयः । भूमिगोप्यो भविष्यन्ति पुण्यैर्नानाविधैः कृतैः ॥

(गर्गसंहिता, गोलोकखण्ड ५/१,२,३)

उन यूथों में वैकुंठाधिष्ठातृ देवी श्री लक्ष्मी जी की सहचरियाँ, श्वेतद्वीप की सखियाँ, भगवान् अजित (श्रीविष्णु) के चरणाश्रित होकर ऊर्ध्व वैकुण्ठ में निवास करने वाली देवियाँ एवं श्री लोकाचल पर्वतवासिनी तथा समुद्र से प्रकटित श्री लक्ष्मी जी की सखियाँ, ये सभी भगवान् के वर से ब्रज में गोपी रूप में प्रकट हुईं। पूर्वकृत अनेक सुकृतों के प्रभाव से कोई दिव्य, कोई अदिव्य और कोई त्रिगुण वृत्ति वाली देवियाँ ब्रज में गोपी हुईं –

नीतिविन्मार्गदःशुक्लः पतंगो दिव्यवाहनः । गोपेष्टश्च ब्रजे राजञ्जाता षड्वृषभानवः ॥
तेषां गृहेषु संजाता लक्ष्मीपतिवरात्प्रजाः ।

(गर्गसंहिता, माधुर्यखण्ड ११/२)

चिन्तयन्त्यः सदा श्रीमद्गोविन्दचरणाम्बुजम् । श्रीकृष्णस्य प्रसादार्थं ताभिर्माघव्रतं कृतम् ॥
माघस्य शुक्लपंचम्यां वसन्तादौ हरिः स्वयम् । तासां प्रेमपरीक्षार्थं कृष्णो वै तद्गृहान्गतः ॥

(गर्गसंहिता, माधुर्यखण्ड ११/५,६)

ये सभी देवियाँ बरसाना के समीपवर्ती ग्रामों में नीतिवित्, मार्गद, शुक्ल, पतङ्ग, दिव्यवाहन तथा गोपेष्ट आदि ६ वृषभानुओं के घरों में प्रकट हुईं। इन ब्रजाङ्गनाओं ने श्रीकृष्ण की प्रीति के लिए माघ मास का व्रत किया। माघ शुक्ल पंचमी को श्याम सुन्दर ने योगी का छद्म वेश धारण कर इनके प्रेम की परीक्षा ली; (यह लीला विस्तार से रसीली ब्रजयात्रा ग्रन्थ के 'अध्याय – ३ बरसाना' में वर्णित है।)

काश्चिद्दिव्या अदिव्याश्च तथा त्रिगुणवृत्तयः ।
भूमिगोप्यो भविष्यन्ति पुण्यैर्नानाविधैः कृतैः ॥

(गर्गसंहिता, गोलोकखण्ड ५/३)

वीतिहोत्रोऽग्निभुक्सांबः श्रीकरो गोपतिः श्रुतः ।
ब्रजेशः पावनः शांत उपनन्दा ब्रजेभवाः ॥
तेषां गृहेषु संजाताः कन्यका देववाक्यतः ।
काश्चिद्दिव्या अदिव्याश्च तथा त्रिगुणवृत्तयः ॥

(गर्गसंहिता, माधुर्यखण्ड १२/२,४)

अन्य दिव्य, अदिव्य, त्रिगुणवृत्ति वाली देवियाँ पूर्व के अनेक सुकृतों के फलस्वरूप वीतिहोत्र, अग्निभुक्, साम्ब, श्रीकर, गोपति, श्रुत, ब्रजेश, पावन तथा शान्त आदि ९ उपनंदों के गृहों में उत्पन्न हुईं। सबसे उत्तम बात तो यह है कि ये सब परम कृशोदरी, परिमल प्रसारिणी, अमृत निर्झरिणी कीर्तिसुता श्रीजी की प्राणोपम प्रिय सखियाँ हैं और इन सबने प्रिया-प्रियतम के साथ फाग-महोत्सव क्रीड़ा की है। रंगीली के रंग-बिरंगे अबीर से सनी हुई दिशाएँ जब सुरभित हो रही थीं तो ब्रज में रंगीले लाल बिहारी एक दिन आये, इन सभी क्रीड़ोत्सुका सखियों ने श्रीजी से होलिकोत्सव की शोभा बढ़ाने के लिए प्रार्थना की – "हे राधे ! जिनके भाल व गोल कपोलों पर आकर्षक विचित्र पत्र रचना है। सम्पूर्ण श्री अंग केशर निर्मित अबीर से लिप्त हैं, कर में कनक पिचकारी है और नेत्र भानुभवन के द्वार पर टिके हुए आपके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हरि चकोर हित श्रीमुख चन्द्रे ! आपका कृपा करने का तो नित्य सिद्ध सहज स्वभाव है। अब शीघ्र ही यावक पत्रावलि युत श्रीपद से थोड़ा सदन से बाहर चलने का श्रम करके मधुगन्धलुब्ध हरि भ्रमर पर कृपा वर्षण करो।" विद्युत् को भी लज्जित करने वाली यह अनिन्द्य सुन्दरी, जिसकी बिम्बा फल सी अधर शोणता है, पिकमाला सी स्वर सुस्वरता, मधुमाला सी मधुरता, कमलमाल सी वपु कोमलता, चन्द्रमाल सी वपु शीतलता, कुसुममाल सी वपु सुगन्धिता है। कराम्बुज में चन्दन, अगर, कस्तूरी, हल्दी, केसर के रंग-बिरंगे-सुगन्धित-शीतल जल को माटों में भर-भरकर बहुसंख्यक ब्रजकामिनियों से समावृत होकर पिय पर दृग शर छोड़ते हुए बाहर आईं और बाहर आते-आते तो होली का रंगीला युद्ध छिड़ गया। रंग-बिरंगे ही वस्त्र हैं, रंग-बिरंगा ही अबीर है। एक बार में कोटि-कोटि मूठों से उड़ाया गया अबीर गगन को भी रंगीन कर रहा है। रंगीली गोपियों ने रंगीले लाल को चारों ओर से घेर लिया और हाथ से हाथ पकड़ कर जब खड़ी हो गयीं तो कैदी श्रीकृष्ण इन मजबूत जंजीरों के भीतर से जा ही नहीं पाए, फिर तो कैदी का भव्य स्वागत किया गया। पहले मन भर कर नीलमुख कमल एवं विशाल ललाट पर गुलाबी-लाल-पीला गुलाल लगाया, फिर ऊपर से सावन-भादों की धारा की तरह सैकड़ों रंग भरे मांट उड़ेल दिए, फिर स्वयं श्रीजी ने कमलनयन श्रीकृष्ण को होली का स्थूल काजल लगाया। इतने पर भी नंदकुल चन्द्र को सौन्दर्य छोड़ता नहीं क्योंकि स्वयं सौन्दर्यागार जो हैं। अनन्तर कृष्ण ने गोपांगनाओं को फगुआ के रूप में अपना नूतन पीत-पट दिया।

आराधना करो, गुण तो तुम्हारे अंदर स्वतः ही आ जायेंगे।

भक्ति का प्रवेश द्वार 'समत्वभाव'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी नवीनाश्रीजी, मानमन्दिर, बरसाना

प्राणीमात्र कर्मबंधन में आबद्ध है फलतः विविध परिस्थितियों के आवर्तन में वह अपने को देखता रहता है | कदाचित् अत्यंत हर्ष की अनुभूति अथवा कभी भयंकरतम दुःख का का आभास या कभी-कभी निरपेक्ष स्थिति में भी देखा जाता है | हमारी अनुकूलता, प्रतिकूलता या उपरामता सर्वत्र क्रमशः रहेगी ही | भौतिक दृष्ट्या यह कोई आश्चर्य नहीं है परन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से यह ठीक नहीं है क्योंकि समत्व के बिना अध्यात्म में प्रवेश ही नहीं है | प्रभु का हर विधान मंगलमय होता है | इसमें सुख-दुःख की की अनुभूति ही गलत है | गीताजी में समत्व योग को सर्वोत्कृष्ट कहा गया है –

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय |
सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ||

(श्रीमद्भगवद्गीताजी २/४८)

इस समत्वयोग को तीन भागों में विभाजित किया गया है | १. परिस्थितिजन्य समत्व २. व्यक्ति प्रधान समत्व ३. वस्तु प्रधान समत्व | इस सन्दर्भ में श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय ६ में श्लोक संख्या ६,७,८ में स्पष्ट किया गया है –

१- जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः |
शीतोष्णसुख दुःखेषु तथा मानापमानयोः ||

(श्रीमद्भगवद्गीताजी ६/७)

प्राकृतिक परिस्थितियाँ आती हैं उन सब में हमें समता का अभ्यास करना चाहिए | संसार के द्वंद्व शीतोष्ण व सुख-दुःख में कभी विषमता का अनुभव नहीं करे, वही व्यक्ति भगवद् इच्छा का पालन कर रहा है |

२ - ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः |
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः ||

(श्रीमद्भगवद्गीताजी ६/८) कंकड़-पत्थर हो अथवा स्वर्ण की प्राप्ति, जिसमें भेद की प्रतीति ही नहीं है, वही व्यक्ति वस्तु साम्य में योगी कहा जायेगा |

३- सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु |
साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ||

(श्रीमद्भगवद्गीताजी ६/९)

शत्रु-मित्र में समत्व रख सकें ऐसा प्रयत्न हमें करना चाहिए | जीवमात्र प्रभु की संरचना है | ठीक है कि वह अपने कर्मों व संस्कारों वश विविध ऊँच-नीचावस्था को प्राप्त हुआ है, उन सबमें कृष्ण दर्शन ही श्रेष्ठ है | इस प्रकार हर प्रकार से समत्व योग अपनाये बिना हम भगवत्प्रेम नहीं पा सकते | हमारे पूज्य गुरुदेव तो कहते हैं कि समत्व योग में स्थित होने वाला प्राणी काल को भी जीत लेता है | जैसा कि उन्होंने स्वयं किया कि सन् २०११ से अब तक कितनी ही बार मृत्यु का चुम्बन किया परन्तु समत्व से विमुख नहीं हुए फलतः मृत्यु ही परास्त हो गयी और आज वे लोककल्याण में रत हैं |

श्रीबाबामहाराज के शब्दों में –

योगस्थः कुरु कर्माणि ..... समत्वं योग उच्यते ||

(श्रीमद्भगवद्गीताजी २/४८)

सभी कर्म, योग में स्थित होकर करना चाहिये | आसक्ति के कारण योग नष्ट हो जाता है | भगवान् ने कहा – हे धनञ्जय ! आसक्ति छोड़ने के बाद सभी कर्म योग में स्थित होंगे | अब प्रश्न हुआ कि योग क्या है ? सिद्धि और असिद्धि में समान होकर के समत्व को योग कहते हैं | कोई काम अपने मन के अनुसार सिद्ध हुआ तथा कोई काम अपने मन के अनुसार सिद्ध नहीं हुआ, असिद्ध हुआ तो दोनों में जो समान है, न हर्ष है, न शोक है तो योग हो गया | काम वही है – युद्ध करना, लड़ना-भिड़ना, सफलता-असफलता | काम तो वही रहते हैं लेकिन उसके परिणाम का असर मन पर पड़ता है, उससे योग की स्थिति नष्ट हो जाती है | काम सिद्ध हो गया, उसमें सुखी हो गए और यदि काम असिद्ध हुआ, उसमें दुःखी हो गए तो यह

स्थिति योग को नष्ट कर देती है | भगवान् ने कहा है कि अगर योग में स्थित हो गए तो ब्रह्म में स्थित हो जाओगे |

न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् |
स्थिरबुद्धिरसम्मूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः ||

(श्रीमद्भगवद्गीता- ५/२०)

जो मनुष्य प्रिय वस्तु को प्राप्त करके प्रसन्न नहीं होता तथा अप्रिय को प्राप्त करके उद्विग्न नहीं होता, वही स्थिरबुद्धि है और वही ब्रह्मवेत्ता है अर्थात् ब्रह्म में स्थित है | स्थिर बुद्धि वाला ही स्थितप्रज्ञ बन सकता है | योगी वही है जो योग में स्थित है | योग का मतलब किसी क्रिया से नहीं है | योग का मतलब लोग यही समझते हैं – हठयोग, आसन, प्राणायाम आदि क्रियाएँ | भगवान् गीता में इससे आगे योग के बारे में बता रहे हैं जैसा कि पातंजलि योगसूत्र में कहा गया है – **"योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः |"** योग मन से होता है, शरीर की क्रियाओं द्वारा योग नहीं होता है | यदि तुम बड़ा भारी प्राणायाम और आसन करने वाले हो लेकिन तुम्हारा मन स्थिर नहीं है तो तुम योगी नहीं हो | योगी तो वही है जिसका मन दुःखों में घबराता नहीं है और सुखों के लिए ललचाता नहीं है | उद्विग्न होने से क्रोध और भय पैदा होंगे तथा स्पृहा होने से राग पैदा होगा | इन तीनों का नाश तभी होता है जब मन में दुःखों के कारण उद्वेग न पैदा हो तथा सुखों की स्पृहा उत्पन्न न हो | जो दुःख में घबराता है, उसके अंदर क्रोध भी रहेगा और भय भी रहेगा तथा जो सुख की इच्छा करता है उसके मन में आसक्ति पैदा होगी | इसलिए सुख-दुःख दोनों को छोड़ देना चाहिए क्योंकि इनके कारण उत्पन्न होने वाले राग, भय व क्रोध मनुष्य की बुद्धि को चंचल बनाते हैं, कमजोर बनाते हैं और इस तरह से वह मुनि अर्थात् मननशील नहीं बन सकता तथा ब्रह्म में भी स्थिति नहीं हो सकती | जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है –

न प्रहृष्येत्प्रियं .....(श्रीमद्भगवद्गीता ५ /२०)

तुम प्रिय वस्तु को पाकर सुखी होना बंद कर दो तथा अप्रिय वस्तु के प्राप्त होने पर दुःखी होना, घबराना छोड़ दो | उद्वेग से जब मनुष्य घबराता नहीं है तब स्थिरबुद्धि वाला होता है, कभी मोह पैदा नहीं होता | सुखी होना भी मोह है, घबराना भी मोह है, क्रोध करना भी मोह है, उदास होना भी मोह है | अप्रिय वस्तुएं मोह उत्पन्न करती हैं | मोह कब होता है, जब बुद्धि चंचल होती है | स्थिर बुद्धि है तो मोह नहीं होता और मनुष्य ब्रह्म में स्थित हो जाता है | **"स्थिरबुद्धिरसम्मूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः"** ब्रह्मविद तथा ब्रह्म में स्थिति होना- दोनों बातें एक ही हैं | ब्रह्म को हम तभी जान सकेंगे, ब्रह्मवेत्ता हम तभी बनेंगे जब सारे संसार को जीत लेंगे |

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः |
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद् ब्रह्मणि ते स्थिताः ||

(श्रीमद्भगवद्गीता ५/१९)

जिसका मन समानता में स्थित हो गया, उसने यहाँ जीते जी ही संसार को जीत लिया | समानता क्या है? सारा संसार निर्दोष ब्रह्म है, कहीं जरा भी गड़बड़ी नहीं है | सब कुछ ब्रह्म है | जब बुद्धि में ऐसी समझ आ जाती है कि छोटा-बड़ा कोई नहीं है, सब समान ब्रह्म है | अच्छा-बुरा नहीं, सब ब्रह्म है | जब यह ज्ञान होता है तब मनुष्य ब्रह्मवेत्ता बनता है और ब्रह्म में उसकी स्थिति हो जाती है | उपनिषद का एक वाक्य है – **ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति** अर्थात् ब्रह्मवेत्ता वह है जो ब्रह्म बन गया | श्रुति कहती है – ब्रह्म को किसने जाना, उसने जाना जो ब्रह्म हो गया | अतः ब्रह्म होने के बाद ही ब्रह्म को जाना जा सकता है | बिना ब्रह्म हुए ब्रह्म को नहीं जाना जा सकता |

गोस्वामी तुलसीदासजी ने भी कहा –

सोइ जानइ जेहि देहु जनाई |
जानत तुमहि तुमहि होइ जाई ||

तुमको जानने वाला तुम्हारा ही स्वरूप बन जाता है | **"ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति"** –ब्रह्म को जो जान जाता है, वह ब्रह्म ही बन जाता है | ब्रह्म को जानना क्या है ?

"निर्दोषं हि समं ब्रह्म" – संसार सब कुछ निर्दोष ब्रह्म है, कहीं कुछ भी खराबी नहीं है, ऐसी जिसकी दृष्टि है, उसकी ब्रह्म में स्थिति हो गयी है | उपनिषद का जो वाक्य है – ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति, वही बात भगवान् ने भी कही है –

ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः – ब्रह्म को जो जान गया, वह ब्रह्म में स्थित हो गया, वह दुनिया में नहीं है | ऐसी स्थिति को प्राप्त करने के लिए प्रिय वस्तु को पाकर प्रसन्न मत हो जैसे मान-सम्मान, धन-संपत्ति को प्राप्त करके हम प्रसन्न होते हैं तो हम ब्रह्मवेत्ता नहीं बन सकते | इसी प्रकार अप्रिय वस्तु अपमान, हानि आदि पाकर यदि हम उदास होते हैं तो हम ब्रह्मवेत्ता नहीं बन सकते | इसलिए ये सब क्रियाओं में देखना चाहिए | जानकार लोग इन्ही लक्षणों से पहचान लेते हैं कि इस व्यक्ति में कितना ज्ञान है ? जैसे रहूगण ने जड़भरतजी को देखा कि इसको हमने फांसी की सजा देने का हुक्म सुनाया किन्तु फिर भी यह नहीं घबराया अतः यह ब्रह्मवेत्ता है | तुरंत ही वह जड़भरतजी के चरणों में गिर पड़ा | यह लक्षण है ब्रह्मवेत्ता का | एक क्षण में ही उनके लक्षणों को देखकर रहूगण जड़भरतजी को पहचान गया और बोला कि आपके चित्त में विकार नहीं है |(विकार का अर्थ है चंचलता) आप विश्वसुहृद भगवान् के सखा हैं क्योंकि आपमें साम्य आ गया | साम्य या समानता कब आती है, जब वीताभिमति आती है | अहं मन को गड़बड़ कर देता है | अहं से संतुलन बिगड़ जाता है | वीताभिमति माने अहं चला गया | अहं ही उछलता-कूदता है, रोता है, चिल्लाता है, क्रोध करता है | ये सारी क्रियाएं अहं के कारण होती हैं | भगवान् ने इस बात को भागवत में कहा है कि अहं से ही सारे विकार उत्पन्न होते हैं –

शोकहर्षभयक्रोधलोभमोहस्पृहादयः ।
अहङ्कारस्य दृश्यन्ते जन्ममृत्युश्च नात्मनः ॥

(श्रीमद्भागवतजी ११/२८/१५)

अहं से ही शोक होता है, अहं ही रोता है, अहं ही खुश होता है, अहं ही डरता है,अहं ही क्रोध करता है,अहं ही लोभ पैदा करता है, अहं से ही मोह उत्पन्न होता है, अहं से ही इच्छायें उत्पन्न होती हैं,जन्म भी अहंकार का होता है, मृत्यु भी अहंकार की होती है | ये नौ चीजें अहंकार के कारण होती हैं | इसीलिए रहूगण जड़भरत जी को पहचानकर बोला कि निश्चित रूप से आप महापुरुष हैं क्योंकि आपमें विकार नहीं है, आप भगवान् के सखा हैं | जो भगवान् का सखा, भगवान् का भक्त होता है, उसमे अहंकार नहीं होता है |

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी ॥

(श्रीमद्भगवद्गीता १२/१३)

भक्त निर्मम होता है, उसमे ममता नही होती, अहंकार नहीं होता, सुख–दुःख में समान होता है, क्षमावान होता है | उसे कुछ भी कह दो, वह उत्तर नहीं देता है | बकबक नहीं करता जैसे मूर्ख आदमी चिल्लाता रहता है, बोलना बंद नहीं करता, लोग रोकते हैं लेकिन रुकता नहीं है | ये सब मूर्खो के लक्षण हैं | रहूगण ने जड़भरत जी से कहा कि आप कुछ नहीं बोल रहे हैं, इसलिए आप वीताभिमति हैं, भगवान् के सच्चे भक्त हैं | जो अभक्त होता है उसकी वाणी का आवेग नहीं रुकता है | वह तो बकबक करता जायेगा चाहे उसे कितना ही क्यों न रोको क्योंकि उसका अहं उछलता रहता है, अहं चुप नहीं बैठने देता इसलिए भगवान् ने कहा कि स्थितप्रज्ञ बनने के लिए भी यही लक्षण हैं – **दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।**
दुःख में घबराहट, भय न हो, सुखों की स्पृहा(इच्छा)न हो |

वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥

इस प्रकार स्थिर बुद्धि हुई और ब्रहावेत्ता बन गये, बहुत शीघ्र ब्रह्म में स्थिति हो गयी | इसलिए जिसको परमार्थ में चलना है, उसको अपनी बुद्धि स्थिर रखनी होगी | भगवान् ने यहाँ तक कहा कि वेद पढ़ने से भी क्या होगा, वेद पढ़ने से भी बुद्धि चंचल हो जाती है-

श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥

(श्रीमद्भगवद्गीता २/५३)

जो लोग ज्यादा पढ़ लेते हैं, उनकी बुद्धि प्रतिपन्न अर्थात् अलग चली जाती है, चंचल हो जाती है | संसारी पढ़ाई मन को चंचल बनाती है | वेद की पढ़ाई भी मन को चंचल कर देती है | जब मन चंचल नहीं रहेगा, स्थिर हो जायेगा, भगवान् कहते हैं तब तुम्हारी बुद्धि मुझमे अचल हो जाएगी

तब तुमको योग की प्राप्ति होगी, इसके पहले योग की प्राप्ति नहीं होगी | स्थितप्रज्ञ नहीं है तो उसको योग की प्राप्ति नहीं होगी | इसीलिए अर्जुन ने भगवान् से प्रश्न किया कि स्थितप्रज्ञ होने के लिए क्या करना चाहिए ?

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥

(श्रीमद्भगवद्गीता २/५४)

स्थितप्रज्ञ की क्या भाषा है, क्या लक्षण है, कैसे वह बोलता है, कैसे उठता है, कैसे क्रिया करता है ? इसके पहले के श्लोक में भगवान् ने पहले ही कह दिया – **समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि |**

स्थितप्रज्ञ को ही योग की सिद्धि होगी, जब अचल बुद्धि होगी तभी योग की प्राप्ति होगी, उसके पहले नहीं होगी | उसके पहले मन इधर-उधर जायेगा | लोग साधु बनने के बाद भी विवाह करते हैं क्योंकि बुद्धि अचल नहीं रहती है और वे योग से गिर जाते हैं | इस तरह भगवान् ने अर्जुन से इस श्लोक में कहा कि हर कर्म, योग में स्थित होकर करो, आसक्ति छोड़कर करो | सिद्धि-असिद्धि में समान हो गए तो योग हो गया, इस समत्व में स्थित होने के बाद तुम जो भी काम करोगे, वह तुमको परमार्थ में सहायता देगा | (गीता ६/९) इस श्लोक में बताई गई नौ जगह जिसकी बुद्धि समान है, वह विशेष (गुणातीत, समदर्शी) हो जाता है | सब बीमारी आदि दूर हो जाती है, हमारा अनुभव है इसलिए हमारा विश्वास जमा इस योग पर | इस योग का सब लाभ लें | सब लड़के व लडकियां जो पढेंगे समत्व योग से सब दिव्य हो जायेंगे | इसके भक्तमाल में अनेकों उदाहरण हैं, भक्तों की कथाएं हैं | समत्वयोग से आयु बढ़ती है | आजकल जो दुनिया में 'कोरोना वायरस' का आतंक मचा है, वह भी समत्व योग के अभ्यास से पास भी नहीं फटकेगा | श्रीगीताजी के श्लोक ६/७,८,९ में क्रमशः 'परिस्थिति, वस्तु, व्यक्ति' की समता बताई गई है | गीता ६/७ में सुख-दुःख आदि सम-विषम परिस्थितियों में सदा समत्व भाव में स्थित रहने की बात कही है, जैसे – भगवान् राम ने अवतार लिया, उनको भी १४ वर्ष के जंगल में जाना पड़ा | भगवान् कृष्ण को जन्म लेते ही मथुरा के कारागार से गोकुल के लिए भागना पड़ा, ऐसी मुसीबत तो आज तक किसी पर नहीं आई होगी, पैदा होते ही जाना पड़ा | इस प्रकार से स्वयं श्रीभगवान् ने सभी युगों में अवतरित होकर के 'व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिति' आदि में समत्वयोग में स्थित रहकर समस्त जीव-जगत को एक बहुत बड़ी भक्तिमय शिक्षा दी | भगवान् व भक्तों के जीवन-चरित्र से समत्व योग की बहुत बड़ी शिक्षा मिलती है |

तुमने सुना होगा कि एक बार अमेरिका ने जापान में बम गिराया था। जो व्यक्ति हवाई जहाज से बम को गिराने के लिए गया था, जब उसने बम गिरा दिया तो वो दूर से दूरबीन में देखने लगा कि क्या हुआ? वहाँ से उसने देखा कि लाखों लोग तड़फ रहे हैं। जहरीली गैस से लोगों का दम घुट रहा है और वे तड़प-तडप कर मर रहे हैं तो यह देखकर वह व्यक्ति पागल हो गया क्योंकि उसने विश्व-द्रोह किया था।

यस्य नाहङ्कृतो ..... हन्ति न निबध्यते ॥

(गी. १८/१७)

भगवान् कहते हैं कि अगर तुम इतने बड़े पापी भी हो कि विश्व- द्रोह करके आये हो, परन्तु यदि तुम मेरी शरण में आ जाओ तो तुरन्त उसी समय क्षमा कर दिये जाओगे। भगवान् इतने बड़े क्षमाशील हैं कि तुम जैसे भी हो यदि भगवान् की शरण में आ गये तो जैसे लोहा पारस के स्पर्श से सोना बन जाता है वैसे ही तुम भी उसी समय सोना बन जाओगे अर्थात् तुम्हारे सब पाप नष्ट हो जाएँगे।

भक्ति का बीज 'भगवन्नाम'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'नाम-महिमा' (२७/५/२०१०) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- दीदीजी गुरुकुल की छात्रा बालसाध्वी दयाजी, मानमन्दिर, बरसाना

सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू |
लोक लाहु परलोक निबाहू ||

(श्रीरामचरितमानसजी, बालकाण्ड – २०)

रामायण की एक भी चौपाई अगर समझ में आ जाए तो मनुष्य निष्ठा को प्राप्त हो जाएगा | इस चौपाई में कहा गया है कि 'श्रीभगवन्नाम' स्मरण करने में सुलभ है | अब क्यों सुलभ है, इसको समझना चाहिए और समझाना चाहिए | वैदिक शास्त्र के जितने भी मन्त्र हैं, उनमें विधि-निषेध है | कोई भी मन्त्र जपने के लिए शुद्धि की आवश्यकता है, स्नान करना जरूरी है | गायत्री मन्त्र में शूद्र का अधिकार नही है, स्त्री का अधिकार नहीं है किन्तु भगवान् के नाम के सम्बन्ध में सबसे पहली बात तो यह है कि इसमें कोई विधि-निषेध नहीं है और स्मरण करने में यह सुलभ है, जैसे - मान लिया जाए कि स्त्री शरीर है तो यह मासिकधर्म में अपवित्र रहता है लेकिन भगवन्नाम ग्रहण करने के लिए अपवित्र होना निषेध नहीं है, यह हर अवस्था में सुलभ है | सबसे गंदी स्थिति तब होती है जब किसी की मृत्यु हो जाती है, उस समय सूतक लग जाता है लेकिन मुर्दे को दाह-संस्कार के लिए ले जाते समय जानबूझकर भगवान् का नाम लिया जाता है – राम नाम सत्य है; यह भगवन्नाम की सुलभता है | अन्य सभी शास्त्रोक्त साधनों के लिए अधिकार की पात्रता होना आवश्यक है किन्तु नाम के सन्दर्भ में श्रीमद्भागवत में कहा गया है –

ब्रह्महा पितृहा गोघ्नो मातृहाऽऽचार्यहाघवान् |
श्वादः पुल्कसको वापि शुद्ध्येरन् यस्य कीर्तनात् ||

(श्रीमद्भागवतजी ६/१३/८)

चाहे ब्रह्म-हत्यारा हो, गौ-हत्यारा हो, माता-पिता का हत्यारा हो, गुरु का हत्यारा हो, सभी को नाम लेने का अधिकार है, यह सभी को सुलभ है | संसार के चर-अचर सभी जीवों का नाम में अधिकार है, सभी का नाम से कल्याण होता है | चैतन्य महाप्रभुजी ने कहा है –

पशु-पक्षी कीट भृंग बोलि ते न पारे,
शुनि लेई हरि नाम तारा सब तरे |

पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े, पेड़-पौधे आदि जीव 'हरिनाम' नहीं बोल सकते हैं लेकिन जब वे संकीर्तन में 'हरिनाम' सुनते हैं तो उनका भी उद्धार हो जाता है | भागवत में अन्यत्र भी कहा गया है –

यन्नामधेयश्रवणानुकीर्तनाद्
यत्प्रह्वणाद्यत्स्मरणादपि क्वचित् |
श्वादोऽपि सद्यः सवनाय कल्पते
कुतः पुनस्ते भगवन्नु दर्शनात् ||

(श्रीमद्भागवतजी ३/३३/६)

श्रीभगवान् का नाम सुनने से ही कल्याण हो जाता है | यदि भगवान् का नाम नहीं ले सकते हो तो सुन ही लो, नाम सुनने में सबका अधिकार है, इससे ज्यादा सुलभ साधन और क्या होगा ?

यन्नाम गृह्णन्नखिलान् श्रोतॄनात्मानमेव च |
सद्यः पुनाति किं भूयस्तस्य स्पृष्टः पदा हि ते ||

(श्रीमद्भागवतजी १०/३४/१७)

भागवत के इस श्लोक में बताया गया है कि नाम-ग्रहण करने से अखिल जीवों का अर्थात् चर-अचर समस्त प्राणियों का कल्याण होता है | कीर्तन करोगे तो अनंत परोपकार होगा, जितने भी जीव भगवान् का नाम सुनते हैं, उसी समय उनका कल्याण हो जाता है | स्नान करने की जरूरत नहीं, मुर्दा सिर पर ले जा रहे हैं, अपवित्र होने पर, अशौच की स्थिति में भी निर्भ्रांत चित्त से भगवान् का नाम लो | ऐसा सुलभ साधन संसार में कहीं नहीं है | **'सुखद सब काहू'** - सब काहू माने पापी, अधम, हत्यारे सभी के लिए नाम सुखद है अर्थात् नाम लेने से उनकी उत्तम गति होती है और सभी पाप नष्ट हो जाते हैं |

अन्त्यज जैसे शूद्र आदि को गायत्री मन्त्र का अधिकार नहीं है किन्तु भगवान् के नाम में सृष्टि के सभी जड़-चेतन प्राणियों को अधिकार है | अब यहाँ प्रश्न है कि भगवन्नाम ही सबसे ज्यादा पापनाशक क्यों है ? भागवत के अंत में श्लोक आता है –

नामसङ्कीर्तनं यस्य सर्वपापप्रणाशनम् ।
प्रणामो दुःखशमनस्तं नमामि हरिं परम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी १२/१३/२३)

भगवन्नाम-संकीर्तन सर्वपाप अर्थात् पृथ्वी के समस्त पापों का नाशक है, ऐसा केवल नाम-संकीर्तन में ही है, अन्य साधनों में क्यों नहीं है ? इस श्लोक में नाम- संकीर्तन कहा गया है, नाम-जप नहीं कहा गया है | जप यदि कहा जाएगा तो सुनने वाले लाभ से वंचित रह जायेंगे क्योंकि जप करने वाला केवल अपना ही कल्याण कर सकता है, हजारों-लाखों सुनने वालों का कल्याण नहीं कर सकता | इसीलिए चैतन्य महाप्रभु ने कहा है –

"जपि लेते हरि नाम करिया निज साधन,
उच्च संकीर्तन करे उपकारे |"

जप करने वाला केवल अपने ही कल्याण का साधन करता है जबकि उच्च संकीर्तन करने वाला अनंत गुना परोपकार करता है | इसीलिए भागवत के उपरोक्त श्लोक में नाम-संकीर्तन के बारे में कहा गया है – 'सर्वपापप्रणाशनम्' – नाम-संकीर्तन सारे विश्व के समस्त प्रकार के पापों का विनाश करता है | इसमें चर-अचर समस्त जीव आ गये | 'नाम' में ही ऐसी शक्ति क्यों है ? इसका उत्तर यह है कि नाम और नामी दोनों अभेद हैं | इसी बात को आगे बीसों चौपाइयों में कहा गया है –

"कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके |
राम लखन सम प्रिय तुलसी के ||"

भगवान् का नाम कहने और सुनने से ही कल्याण हो जाएगा | कुछ नहीं कर सकते हो तो केवल नाम को सुनते ही जाओ |

"बरनत बरन प्रीति बिलगाती | ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती ||" राम नाम के दोनों अक्षर 'रा' और 'म' को अलग नहीं किया जा सकता | ब्रह्म और जीव जैसे एक साथ रहते हैं, वैसे ही नाम और नामी का नित्य सम्बन्ध है –

"नर नारायन सरिस सुभ्राता |
जग पालक बिसेषि जन त्राता ||"

जैसे नर और नारायण नित्य साथ रहते हैं, वैसे ही नाम और नामी का नित्य सम्बन्ध है –

"नाम रूप दुइ ईस उपाधी |
अकथ अनादि सुसामुझि साधी ||"

नाम और रूप सदा एक साथ रहते हैं, जहाँ रूप है वहीं नाम है | इसलिए नाम और नामी एक हैं | यहाँ तक कहा गया है –

"को बड़ छोट कहत अपराधू |
सुनि गुन भेदु समुझिहहिं साधू ||"

नाम और नामी में यदि नाम को छोटा बता दिया तो यह अपराध है –

"देखिअहिं रूप नाम आधीना |
रूप ग्यान नहिं नाम बिहीना ||"

भगवान् का रूप नाम के आधीन है | नाम के बिना रूप का ज्ञान नहीं होता है –

"रूप बिसेष नाम बिनु जानें |
करतल गत न परहिं पहिचानें ||"

भगवान् के रूप-दर्शन से भी बड़ा नाम है –

"नाम रूप गति अकथ कहानी |
समुझत सुखद न परति बखानी ||
अगुन सगुन बिच नाम सुसाखी |
उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी ||"

भगवान् के निर्गुण और सगुण स्वरूप के बीच नाम है | **"ब्रह्मसुखहि अनुभवहिं अनूपा |"** नाम से ही ब्रह्मसुख मिलता है, नाम से ही योगादि की सिद्धियाँ मिलती हैं |

"साधक नाम जपहिं लय लाएँ |

होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ ||
जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ |
नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ ||"

भगवान् की गूढ़ गति भी नाम से ही मिलेगी | चूँकि नाम- नामी अभेद हैं इसलिए नाम में जितनी पापनाशक शक्ति है वह किसी अन्य साधन में नहीं हो सकती | इस बात को जब जीव समझ लेता है तो अनन्यभाव से नाम का आश्रय लेता है | इसीलिए रामायण की रचना करते समय गोस्वामी तुलसीदासजी ने प्रारम्भ में नाम-महिमा के प्रसंग का विस्तार से वर्णन किया है क्योंकि नाम के बिना तो भक्ति सम्भव ही नहीं है | नाम के बिना भक्ति विधवा है | **"भगति सुतिय कल करन बिभूषन |"** सुहागिन स्त्री ही कुंडल धारण कर सकती है | 'नाम' भक्ति रूपी सुहागिन स्त्री के कानों का कुंडल है | जैसे - भक्ति स्त्री है और भगवान् पति हैं | **"पुनि रघुवीरहि भगति पियारी |"**

(श्रीरामचरितमानसजी, उत्तरकाण्ड -११६)

भक्ति भगवान् की प्यारी स्त्री है | **"भगतिहि सानुकूल रघुराया | तेहि ते पुनि डरपति यह माया |"** माया भी भगवान् की शक्ति है किन्तु यह भक्ति से डरती है | **"माया भगति नारि बर्ग दोऊ |"** माया और भक्ति दोनों ही नारी वर्ग में हैं किन्तु भक्ति भगवान् की प्रिय स्त्री है | यह सदा सुहागिन है | सदा सुहागिन क्यों है ? भक्ति सदा सुहागिन इसलिए है क्योंकि नाम रूपी पति सदा उसके साथ है | सुहागिन सदा अपने पति के साथ रहती है | **"भगति सुतिय कल करन विभूषन |"** एक दूसरी बात यह भी है कि नाम से ही सारी वासनायें नष्ट होती हैं जैसे सूरदास जी का एक पद है – **"तुम्हरी एक बड़ी ठकुराई |"** सबसे जो बड़ी कृपा, ठकुराई है भगवान् की वह यही है कि **"प्रतिदिन जन-जन कर्म सबासन, नाम हरे जदुराई |"**

यह सूरदासजी का मत है | अनंत जीवों के हर समय जो कर्म हो रहे हैं वे वासना पैदा करते हैं, सवासन माने वासना सहित | भगवन्नाम कर्मों का तो नाश करता ही है, साथ ही उनकी वासनाओं का भी नाश करता है | यह नाम की सबसे बड़ी विशेषता है और अन्य साधन क्या करते हैं, यह भी सूरदास जी ने इसी पद में बताया है | यह बड़ा दिव्य पद है | "**कुसमित कर्म धर्म को मारग जो कोऊ करत बनाई** |" कुसमित माने वेदमार्ग | श्रीभगवान् ने गीताजी (२/४२) में कहा है –

यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः ।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ॥

वेद के सकाम भाग को पुष्पित वाणी कहा गया, फूल ही फूल हैं उसमें, फल कुछ नहीं हैं, परमार्थ नहीं है, इसमें प्रलोभन दिया जाता है कि राज्य ले लो, भोग ले लो, सांसारिक सुख ले लो इसीलिए इसे पुष्पितां वाचम् कहा गया | यह वेद का सकाम अंश है, उसको विद्वान् लोग छोड़ देते हैं और जो मुख्य फलांश है परमार्थ, उसको ले लेते हैं | उसी को सूरदास जी कहते हैं - कुसुमित कर्म धर्म को मारग..... यज्ञ आदि जितने सकाम कर्म हैं ये कुसुमित मार्ग है | राजस्थान में साधुओं में यज्ञ बहुत होते हैं, कहीं शतचंडी यज्ञ हो रहा है, कहीं अमुक यज्ञ हो रहा है, इसमें बहुत पैसा लगता है और अब यह लम्बा व्यापार बन गया है | इसमें बचत भी ज्यादा है लेकिन उसमें है कुछ नहीं, शून्य है | न आजकल मंत्र के ज्ञाता रहे, न आचरण रहा इसलिए यज्ञ केवल व्यापार बन गया है | केवल नाम और पैसा के लिए यज्ञ किया जाता है | सूरदासजी कहते हैं – कुसुमित कर्म धर्म को मारग, जो कोऊ करत बनाई, बड़े मुश्किल से किसी ने करोड़ों रुपये लगाकर यज्ञ किया, **"तदपि विमुख पाँति सो गनियत भक्ति हृदय नहीं आई |"** तब भी भगवान् से विमुख ही रहोगे | सूरदासजी ने स्पष्ट कह दिया कि यह विमुखता का मार्ग है | इससे हृदय में भक्ति नहीं आती है | फिर भक्ति कैसे आएगी ? "**भक्ति पंथ मेरे अति नियरे, जब तव कीरति गाई |"** भगवान् का नाम, गुण गाओ, नाचो, यही विशुद्ध भक्ति है, जो सबसे सरल-सरस साधन व साध्य है |...क्रमशः

विशुद्ध प्रेममयी 'ब्रजभूमि'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'धाम-महिमा' से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी हरिगीताजी, मानमन्दिर, बरसाना

वर्तमान में ब्रजभूमि का स्वरूप बदलता जा रहा है | ब्रज का जैसा स्वरूप द्वापर में श्रीकृष्णलीलाकाल में था, उसका उन्होंने नन्दबाबा से वर्णन किया है –

न नः पुरोजनपदा न ग्रामा न गृहा वयम् ।
नित्यं वनौकसस्तात वनशैलनिवासिनः ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/२४/२४)

"बाबा ! हम लोगों के पास ग्राम नहीं है, नगर नहीं है, हमलोग तो वन के निवासी हैं, ब्रज के पर्वत और वन ही हमारा निवासस्थल, हमारे घर हैं |" ब्रज का यह स्वरूप स्वयं श्रीकृष्ण ने अपने पिता नन्दबाबा को बताया | श्रीमद्भागवत में अन्यत्र भी ब्रज-वृन्दावन का यही स्वरूप श्रीकृष्ण ने दाऊजी से कहा – देखो भइया ! हमलोग ब्रज में जहाँ भी चलते हैं, जिस गली से निकलते हैं, जिस पर्वत पर विचरण करते हैं, वहाँ अत्यंत विचित्र प्रेम भरा खेल होता है, आप उसे देखिए –

स तत्र तत्रारुणपल्लवश्रिया, फलप्रसूनोरुभरेण पादयोः । स्पृशच्छिखान् वीक्ष्य वनस्पतीन् मुदा, स्मयन्निवाहाग्रजमादिपूरुषः ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/१५/४)

राम-श्याम ब्रज के जिस वन में, जिस गली में जाते हैं, वहाँ की लतायें, वहाँ के वृक्ष लाल पल्लवों की डलिया बनाकर उनका प्रेमभरा सत्कार करते हैं | पल्लवों की डलिया में अत्यंत रसीले फल, अतिशय सुन्दर फूल भरकर हर लता, हर वृक्ष उनके चरणों में अर्पित कर देते हैं | किसी एक वृक्ष की बात नहीं है, जितने भी वृक्ष हैं, वे राधा-माधव अथवा राम-श्याम का चरण स्पर्श करते हैं | ब्रज के लताओं-वृक्षों की ऐसी प्रेमपूर्ण स्थिति देखकर श्यामसुन्दर अपने अग्रज बलरामजी से बोले –

अहो अमी देववरामरार्चितं, पादाम्बुजं ते सुमनःफलार्हणम् ।
नमन्त्युपादाय शिखाभिरात्मनस्तमोऽपहत्यै तरुजन्म यत्कृतम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/१५/५)

हे देवों में श्रेष्ठ दाऊजी ! आपके चरणकमलों की समस्त देवगण वन्दना करते हैं | यही भाव श्रीवृन्दावन शतक में श्यामसुन्दर द्वारा श्रीजी के प्रति व्यक्त किया गया है | भागवतकार की यह शैली है कि श्रीजी को गोपनीय तत्व मानकर प्रत्यक्ष की तरह सामने उनका स्पष्ट वर्णन नहीं किया है किन्तु श्रीवृन्दावनशतक, श्रीराधासुधानिधि तथा अन्य ग्रन्थों में रसिकों ने ऐसा वर्णन किया है कि यही वचन नन्दनन्दन ने वृषभानुनन्दिनी के प्रति कहे हैं –

"राधे देख वन की बात |"

हे लाड़ली ! इस वन को देखिये, यहाँ की प्रत्येक लता आपका स्वागत कर रही हैं | श्रीमद्भागवत में यही उद्गार श्यामसुन्दर ज्येष्ठ भ्राता बलरामजी के प्रति व्यक्त कर रहे हैं कि आपके चरणकमल देववृन्द द्वारा वन्दित हैं | इस वन में आप जहाँ से भी निकलते हैं, लता और वृक्ष आपका प्रेमपूर्ण सत्कार कर रहे हैं | अपनी शिखाओं द्वारा लतायें आपके चरणों को नमन करती हैं | इसलिए इन्हें वृन्दावन में लता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, इससे 'तम' का नाश हो गया है | 'तम' के नाश का यह अभिप्राय नहीं है कि ये लता और वृक्ष अपने 'तम' का नाश कर रहे हैं, ये तो लाड़ली-लाल की उपासना कर रहे हैं, अतः इनमें 'तम' कहाँ से हो सकता है परन्तु जो अचर जाति के वृक्ष हैं, उनका ये लता और वृक्ष प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और इनके प्रेम के कारण अचर जाति के सभी वृक्षों के 'तम' का नाश हो रहा है, ब्रज के समस्त लताओं और वृक्षों की यह दशा है | आर्ष-वाणियों के इस प्रमाण द्वारा अनुमान लगाया जा सकता है कि सम्पूर्ण ब्रज-वृन्दावन, यहाँ के पर्वतों में एक-एक शिखर, गिरिराजजी आदि लताओं और वृक्षों से भरपूर होकर श्रीकृष्ण की उपासना करते हुये रस की वर्षा कर रहे हैं | श्रीकृष्ण ने आगे कहा –

एतेऽलिनस्तव यशोऽखिललोकतीर्थं,

गायन्त आदिपुरुषानुपदं भजन्ते ।
प्रायो अमी मुनिगणा भवदीयमुख्या,
गूढं वनेऽपि न जहत्यनघात्मदैवम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/१५/६)

हे दाऊजी ! और तो क्या यहाँ के भ्रमर, यहाँ के पक्षी सब आपके यश का गायन करते हैं |

वृन्दावन के वृक्ष को, मरम न जाने कोय |
डार-डार फल पात सों, श्रीराधे-राधे होय ॥

ऐसा स्वयं श्रीकृष्ण कह रहे हैं कि ब्रज-वृन्दावन धाम का एक-एक भ्रमर, एक-एक पक्षी तक भगवद्-यश गाता है | यह कोई भ्रमरों अथवा पक्षियों की सामन्य-सी भनभनाहट अथवा साधारण कलरव नहीं है | कैसा रसमय यह धाम है कि यहाँ जिस वृक्ष के पास चले जाओ, जिस पक्षी के पास चले जाओ, जिस भौंरे के पास चले जाओ, वहाँ युगल सरकार के यश का गान हो रहा है | श्रीमद्भागवत में ऐसा धाम का वर्णन मिलता है | श्रीकृष्ण अपने बड़े भैया बलरामजी से कहते हैं कि हमलोग ब्रज में अपने को छिपाये हुए हैं, ग्वालरूप से यहाँ क्रीडा कर रहे हैं परन्तु यहाँ जो भ्रमर हैं, वे मुनिगण हैं, ये हमको पहचान गये हैं और एक पल को भी हमें छोड़ नहीं रहे हैं और सदा-सर्वदा हमारे यश का गायन कर रहे हैं | इसके अतिरिक्त हमलोग जहाँ भी, जिस किसी वन में जाते हैं, वहाँ हमारे स्वागत के लिए मयूरगण नृत्य करते हैं, इतना रसमय यह धाम है; ऐसा श्रीमद्भागवत में प्रभु श्यामसुन्दर स्वयं कह रहे हैं, ब्रजधाम के स्वरूप का वर्णन कर रहे हैं | उस समय (द्वापरकाल में) ब्रज कैसा था और आज के युग-प्रभाव से धाम की क्या स्थिति है? इसे इसलिए जानना जरूरी है ताकि हमलोग जब भावना करने बैठें अथवा जो लोग लीला-चिन्तन करते हैं, उनको इसी प्रकार धाम के स्वरूप का चिंतन करना चाहिए | उपास्य की दृष्टि से इस प्रकार यह धाम का स्वरूप बताया गया | श्याम बोले – देखो दाऊ ! हमलोग जिधर जाते हैं, उधर मयूर-मयूरी नृत्य कर रहे हैं स्वागत करने के लिए इस भाव से कि श्रीकृष्ण आ रहे हैं | हिरनियाँ नृत्य करने वालीं नर्तकियों की भाँति कला दिखा रहीं हैं, यह बड़े आश्चर्य की बात है | फिर गोपियों की कला का तो कहना ही क्या होगा | जिस प्रकार गोपियाँ देखती हैं, उसी प्रकार प्रत्येक हिरनी सामने आकर अश्रुपूर्ण नेत्रों से देख रही है, स्वागत कर रही है और प्रेम के भावों का प्रदर्शन कर रही है और हे दाऊ ! वृन्दावन का दिव्य संगीत सुनो | संगीत क्या है? व्याकरण के अनुसार संगीत की परिभाषा है – **"सम्यक प्रकारेण गीते इति संगीतम् |"** किन्तु संगीत की यह परिभाषा अपूर्ण है – 'सम्यक प्रकारेण गीते' अर्थात् सम्यक् प्रकार का गीत क्या है? संगीत शास्त्रकारों ने कहा है कि संगीत की वास्तविक परिभाषा यह है – **"गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतं उच्यते |"** गीत, वाद्य तथा नृत्य तीनों का जहाँ संयोग हो, उसे संगीत कहते हैं | गान तो होना चाहिए, साथ ही वाद्य भी होना चाहिए तथा नृत्य भी होना चाहिए; तीनों में से एक भी अंग यदि नहीं है तो संगीतशास्त्र के अनुसार वह संगीत नहीं है | श्यामसुन्दर कहते हैं – हे दाऊ ! इस ब्रज में दिन-रात संगीत चलता है, यह इस धाम का स्वरूप है | इस स्वरूप को समझना बहुत आवश्यक है, जो उपासक है उसके लिए | इसलिए आवश्यक है क्योंकि आज जो परिवेश बदल रहा है, उस बदलते हुए परिवेश में धाम का जो प्राचीन स्वरूप है, उसका हृदय में भाव नहीं आ पाता | नृत्य दो प्रकार का होता है, आचार्यों के अनुसार एक नृत्य 'तांडव' होता है और दूसरा 'लास्य' होता है; संगीतशास्त्री इसे जानते हैं और इन सब प्रकार के नृत्य का वर्णन श्रीमद्भागवत में किया गया है | भागवत में महारास के प्रकरण में दिव्य संगीत का प्राकट्य हुआ और उसका वर्णन भी किया गया है | यह बड़े दुःख की बात है कि महारास का संगीत क्या है, मेरी दृष्टि में, अभी तक इसपर कोई शोधपूर्ण विचार नहीं रखा गया क्योंकि अधिकतर विद्वान संगीत नहीं जानते हैं और जो संगीत जानते हैं वह विद्वान नहीं होते हैं | संसार में जितने प्रकार के संगीत चल रहे हैं, श्रीबाबामहाराज के अनुभव के अनुसार –

विश्व में संगीत की दो धारायें चल रही हैं | एक तो *(MELODY)* मेलॉडी-धुन प्रधान और दूसरा *(HARMONY)* स्वर-प्रधान | भारतवर्ष का संगीत 'मेलॉडी-प्रधान' है और पाश्चात्य संगीत 'हार्मोनी-प्रधान' है; बाबाश्री ने निरीक्षण किया है कि इन दोनों का ही वर्णन श्रीमद्भागवत के महारास-प्रकरण में किया गया है और वहाँ इन दोनों से अतिरिक्त भी कुछ वर्णन है | श्रीबाबा कहते हैं कि यह केवल मेरी ही कल्पना नहीं है बल्कि आचार्यों ने भी इसे लिखा है कि केवल नृत्य ही रास नहीं है | रास का जो नृत्य है, उसे कुछ आचार्यों ने हल्लीशक कहा है, वह न तो स्वर्ग में है, न अन्य किसी देवलोक में है; ऐसा संगीत, ऐसा नृत्य ब्रह्मांड में कहीं नहीं है, यह ऐसा संगीत है, जिसको आजतक न ब्रह्मा समझ पाये, न महादेव समझ पाये, न सरस्वती, न गणेश कोई नहीं समझ सका, ऐसा भागवत में लिखा है | श्रीकृष्ण का संगीत सबसे अलग है –

विविधगोपचरणेषु विदग्धो वेणुवाद्य उरुधा निजशिक्षाः ।
तव सुतः सति यदाधरबिम्बे दत्तवेणुरनयत् स्वरजातीः ॥
सवनशस्तदुपधार्य सुरेशाः शक्रशर्वपरमेष्ठिपुरोगाः ।
कवय आनतकन्धरचित्ताः कश्मलं ययुरनिश्चिततत्त्वाः ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/३५/१४,१५)

श्रीकृष्ण की वंशी का संगीत सुनकर इंद्र का टोल आया कि यह कैसा संगीत है? ब्रह्मा, महादेव का टोल आया, ये सभी देव अपने सभी परिकरों को लेकर के आये; जैसे इन्द्र के समुदाय में गन्धर्व और अप्सरायें भी इस जिज्ञासा के साथ आये कि ब्रज का संगीत कैसा है? महादेवजी के आनुगत्य में भगवती दुर्गा, गणेश आदि सब आये कि आखिर श्रीराधा-माधव का संगीत क्या है? ब्रह्माजी के टोल में प्रजापति और सरस्वती आदि सब आये किन्तु इन सभी को ब्रज का संगीत समझ में ही नहीं आया | इन्द्र, ब्रह्मा, शिव और सरस्वती आदि ने ब्रज का दिव्य संगीत सुनकर अपने कंधे और सिर को झुका लिया, क्यों? वे यही नहीं समझ पाये कि कौन-सा राग बज रहा है, यह कौन-सा ताल है, क्या गति है, कुछ समझ में नहीं आया चाहे वे ब्रह्मा थे, महादेव थे, सरस्वती थीं या फिर गणेश थे; ऐसा दिव्यातिदिव्य संगीत है ब्रजवसुंधरा का | उसी संगीत का वर्णन करते हुए श्यामसुन्दर दाऊजी से कहते हैं –

नृत्यन्त्यमी शिखिन ईड्य मुदा हरिण्यः, कुर्वन्ति गोप्य इव ते प्रियमीक्षणेन। सूक्तैश्च कोकिलगणा गृहमागताय, धन्या वनौकस इयान् हि सतां निसर्गः ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/१५/७)

दाऊजी ! ब्रज का दिव्य संगीत देखो | श्रीकृष्ण ने यहाँ दो प्रकार के नृत्यों का वर्णन किया है, एक तो मयूरों का, दूसरा हिरनियों का | दो प्रकार का नृत्य क्यों है? इसका रहस्य है | नृत्य शास्त्र में दो प्रकार के नृत्य का उल्लेख है जैसा कि पहले कहा गया – एक नृत्य होता है तांडव गति का, दूसरा नृत्य होता है लास्य गति का | इस संसार में जब नृत्य प्रकट हुआ तो तांडव गति का नृत्य शिवजी ने प्रकट किया और लास्य गति का पार्वतीजी ने किया, दोनों में बहुत बड़ा अंतर है | 'तांडव-नृत्य' में अंग-संचालन बहुत होता है और कभी-कभी इसमें वीररस की प्रधानता हो जाती है | 'लास्य-गति' के नृत्य में अंग-संचालन इतना नहीं होता है, इसमें भाव का प्रदर्शन अधिक होता है, कहो तो नर्तक बैठे-बैठे ही मुख की भंगिमा द्वारा सभी प्रकार के भावों का प्रदर्शन कर देता है, केवल उँगलियों के कम्पन द्वारा थोड़े में ही सारा भाव दिखा देता है, जैसे – 'मणीपुरी-नृत्य' में अंग- संचालन कम होता है, उसमें लास्य-गति की शारणा है | दक्षिण भारत के नृत्य 'भरत नाट्यम' में तांडव की शारणा है; ब्रज के वनों में दोनों प्रकार के नृत्य का श्रीकृष्ण अग्रज भ्राता बलरामजी से वर्णन कर रहे हैं – दाऊ दादा ! मयूर जो नृत्य कर रहे हैं, यह तांडव-गति का नृत्य है, पूरे पंख खोलकर नृत्य कर रहे हैं तो इसमें सम्पूर्ण अंग संचालन हो रहा है और ये हिरनियाँ केवल नेत्रों द्वारा ही सम्पूर्ण भावों का प्रदर्शन कर रही हैं, यह लास्य-गति का नृत्य है; नृत्य तो हो रहा है परन्तु गान कहाँ हो रहा है तो इसका भी वर्णन है –

सूक्तैश्च कोकिलगणा गृहमागताय,
धन्या वनौकस इयान् हि सतां निसर्गः ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/१५/७)

जब कोई विशिष्ट अतिथि आता है तो विद्वान लोग वैदिक सूक्त के द्वारा उसका स्वागत करते हैं, इसी प्रकार ब्रज-वृन्दावन धाम की कोकिलायें जो गान कर रही हैं वह सूक्त की तरह है | ब्रज-वृन्दावन के पशु-पक्षी सब धन्य हैं, भ्रमर आदि सब धन्य हैं, ये धन्य इसलिए हैं क्योंकि ऐसे प्रेममय धाम में रह रहे हैं | स्वयं श्रीकृष्ण इस धाम में रहने वालों की प्रशंसा करते हैं – "**इयान् हि सतां निसर्गः**" – ब्रजधाम के चराचर जीवों का ऐसा प्रेमभरा स्वभाव होता है, श्रीकृष्ण कहते हैं – हे दाऊ ! मैं भी इनके प्रेमभरे स्वभाव को देखकर मोहित हो गया हूँ, आप भी मोहित हो गये हो | वृन्दावनशतक में स्वयं श्रीजी कहतीं हैं कि वृन्दावन ने मेरा मन चुरा लिया है | रसिकों ने कहा है – **"वन की लीला लालहिं भावै |"** ये वन की लीला प्रिया-प्रियतमलालजू दोनों को अच्छी लगती है | रसिकजन लिखते हैं कि और तो क्या कहें, ये ब्रजभूमि धन्य है |धन्य शब्द बनता है –

"धनं अर्हति इति धन्यः |"

आप धन्य हैं, मतलब आपके पास धन है, कौन-सा धन है? परमार्थ रूपी धन, यही वास्तविक धन है | बड़े-बड़े परमहंस हैं शुकदेव आदि उनको धन्य-धन्य कहा गया, उनके पास कौन-सा पैसा है? धन्य वही है, जिसके पास परमार्थ रूपी धन है | श्रीकृष्ण कहते हैं – अरे दाऊ ! यह भूमि धन्य है क्योंकि यहाँ रास, रासेश्वरी, हम सब लोग यहाँ पर हैं, प्रेमरूपी धन से भूमि भर गई है | यहाँ की लतायें, यहाँ की घास धन्य है, जहाँ तुम्हारे चरण छू रहे हैं | यहाँ के वृक्ष, लतायें धन्य हैं, जिनको हम लोग हाथ से छूते हैं | यहाँ की नदियाँ धन्य हैं, यहाँ के जितने पर्वत हैं, वह सब धन्य हैं | प्रसंगवश यह कहना पड़ता है क्योंकि आजकल वृन्दावन का जो मूर्धन्य समाज है वह उन पर्वतों के विनाश को नहीं देख रहा है, यह दोष हम अनुभव करते हैं | श्रीमद्भागवत पढ़ने वाला जो भी है वह कहेगा कि हाँ, यहाँ की नदियाँ धन्य हैं, यहाँ के पर्वत धन्य हैं | अगर भागवत के प्रति पूज्य बुद्धि होगी तो जो पर्वतों की हानि हो रही है, उसका उसको दुःख होना स्वभाविक है | जहाँ प्रीति होती है, यदि प्रेम है तो शाकुंतलम् में कालिदासजी ने कहा है – **"अनिष्टा.....बन्धु हृदयानि |"** प्रेमास्पद के कष्ट को देखकर प्रेमी के हृदय में दुःख होता है (अनिष्ट की आशंका से बहुत पीड़ा होती है) | अभी आप एक धर्मशाला में रहने के लिए जाइये, रहकर के चले आये | दूसरे दिन धर्मशाला में आग लग गई तो हमें क्या मतलब, हम तो रहकर के चले आये; इस तरह से ब्रज में लोग आते हैं, जाते हैं और रहने वाले रह भी रहे हैं लेकिन धर्मशाला की तरह रह रहे हैं, उन्हें इस विनाश से कोई प्रयोजन नहीं, कोई दुःख नहीं, ये आज प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है | भागवत में स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण कह रहे हैं कि ये नदियाँ धन्य हैं | वर्तमान में श्रीयमुनाजी जिसको पेपरों, रिकार्डों में मृतक नदी (डेड रिवर) घोषित किया गया कि एक नदी ५००० कोलीफोरम सहन कर सकती है लेकिन यमुनाजी में ९७००००० कोलीफोरम फ़ेंजील है, इसलिए इसको मृत नदी घोषित किया गया; इस बात को सुनकर के हिन्दूजनों का हृदय नहीं फटता है, हम ही तो इसके जिम्मेदार हैं, हम लोग ५००००० रुपयों तक की पंगतें कर देते हैं, लड्डू-पेड़ा मारते हैं लेकिन यह नहीं सोचते कि श्रीठाकुरजी को स्वयं कष्ट हो रहा है | जिस धाम की प्रशंसा स्वयं श्रीभगवान् कर रहे हैं, उसके लिए हमारे हृदय में कोई टीस नहीं है | हमलोग एक धर्मशाला की तरह धाम में आते हैं, रहते हैं और चले जाते हैं | श्रीब्रजधाम के पर्वतों के विषय में भगवान् श्रीकृष्ण के वचन हैं –

"नद्यो ऽद्रयः ..... यत्स्पृहा श्रीः |"

(श्रीमद्भागवतजी १०/१५/७)

"ये नदियाँ, पर्वत आदि धन्यातिधान्य हैं, जिन पर परम प्रेमिकाओं गोपीजनों की दृष्टि पड़ी है, जो श्रीजी की ही करुण-कृपा से अवतरित होकर लीलाओं में सहभागी बने हैं |" श्रीश्यामसुन्दर का ब्रजभूमि से अगाध स्नेह, प्रेम है |.....क्रमशः

सबसे सरस साधन 'लीलागान'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'गोपी-गीत' (२७/८/१९९४) से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी माधुरीजी, मानमन्दिर, बरसाना

वस्तुतः श्रीभगवद्-विग्रह आदि की सेवा करना एक कठिन वस्तु है, सेवा में विधि-विधान या रुचि जीव कर नहीं पाता है किन्तु गान सहज है, जहाँ कोई नियम नहीं है | भगवान् के नाम गान में न दिन का नियम है न रात का, न स्नान का न पवित्रता-अपवित्रता का, न जाति और धर्म का | किसी भी जाति,धर्म का, अपवित्र व्यक्ति भी भगवान् का गान कर सकता है | चैतन्य महाप्रभु कहते हैं –

"नाम्नामकारि बहुधा निज सर्व शक्तिस्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः |" (शिक्षाष्टक)

नाम गान में कोई नियम ही नहीं है केवल गाते जाओ, गाते जाओ और इससे अधिक श्रेष्ठ कोई साधन ही नहीं है | इसीलिए रास से श्रीकृष्ण के अंतर्धान होने पर उनसे मिलने के लिए गोपियों ने गीत को चुना कि हमें गाना चाहिए | गान के विषय में ब्रह्माजी ने भागवत में कहा है –

यस्यावतारगुणकर्मविडम्बनानि नामानि येऽसुविगमे विवशा गृणन्ति |
ते नैकजन्मशमलं सहसैव हित्वा संयान्त्यपावृतमृतं तमजं प्रपद्ये ॥

(श्रीमद्भागवतजी ३/९/१५)

यदि तुम भगवान् के गुणों को, उनके कर्मों (उनकी लीलाओं) को गाते हो तो ब्रह्मपद को प्राप्त हो जाओगे | देखो, भगवान् ने इसीलिए ऐसी मीठी लीलाओं को किया है | बहुत से लोग समझ नहीं पाते जैसे हम गा रहे हैं माखनचोरी लीला –

"चोरी करबो सीखो री कन्हैया तेरो लाला | ऊँचो छीको हाथ न आवै, ग्वाल पे ग्वाल चढ़ावे री | अजहू छीको हाथ न आयो, तो डंडा मार गिरावै री ||"
इन लीलाओं को सुन करके बड़े-बड़े लोग मोहित हो जाते हैं लेकिन जो जानकार हैं, जो निष्ठावान हैं, वे बड़े प्रसन्न होते हैं –

जीवनमुक्त ब्रह्मपर चरित सुनहिं तजि ध्यान |
जे हरि कथाँ न करहिं रति तिनके हिय पाषान ||

जीवनमुक्त अर्थात् जो मुक्त हो गए हैं, उनको क्या जरूरत है लीला सुनने की किन्तु गोस्वामीजी कहते हैं कि जो ब्रह्मानंद में लीन हैं ऐसे जीवन्मुक्त भी भगवान् की इन लीलाओं में आनंद लेते हैं जैसे माखन चोरी लीला है, रास में नाच रहे हैं कन्हैया, घुंघरू बज रहे हैं | किसी गोपी की चोटी पकड़ रहे हैं, किसी का अंचल खींच रहे हैं | जीवन्मुक्त लोग उस ब्रह्म की समाधि को छोड़ करके आते हैं | कैलाश से महादेवजी आते हैं और यहाँ ब्रज में भगवान् की लीलाओं में यशोदा के द्वार पर पहुँचते हैं, गोपी बनते हैं, रास में पहुँचते हैं, कहीं ग्वाल लीलाओं में शिव जी पहुँचते हैं स्थान-स्थान पर | इन लीलाओं का गान गोपियों ने स्वयं किया | वे धन्य हैं जो नित्य भगवान् की लीलाओं, उनके चरित्रों को गाते हैं, भगवान् की कृपा के बिना ऐसा संभव नहीं है | स्वयं गोपियों ने माखनचोरी लीला गाई | जब श्रीकृष्ण रास से चले गए तो गोपीजन कृष्णलीला को गाती हुई अभिनय कर रही हैं, क्योंकि वे जानती हैं कि श्रीकृष्ण से मिलने का सबसे सरल-सरस यही उपाय है –

बद्धान्यया स्रजा काचित्तन्वी तत्र उलूखले |
भीता सुदृक् पिधायास्यं भेजे भीतिविडम्बनम् ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/३०/२३)

गोपियों ने ऐसा कृष्णलीलागुणगान रूपी सरस साधन किया, यह सबसे बढ़िया उपाय है कृष्ण से मिलने का | फिर ब्रजगोपियाँ परस्पर में ही कृष्ण की बाललीलाओं का अभिनय करने लगीं – बालकृष्ण को बाँध दिया यशोदा ने, क्यों बाँध दिया था, क्योंकि उन्होंने माट-मटका फोड़ दिए थे | **नन्दनंदन की बाल लीला का एक दृश्य –**

प्रातःकाल कन्हैया सो करके उठे और मैया से कहने लगे कि मैया ! मोकूँ भूख लगी, भूख लगी..| यशोदा मैया दही चला रही थीं, अतः बोलीं – "लाला ! देख, अभी

रुक जा, सदलौनी तो अभी निकल रही है और वैसे तो कल की लौनी रखी है, उसे निकालकर खा ले | बालकृष्ण रोने लगे और कहने लगे कि मैं तो सदलौनी (ताजा माखन) लूँगो | मैया कहने लगी कि लाला, सदलौनी (ताजा मक्खन) निकलने में तो अभी देर है तो बालकृष्णलाल रोने लग गए, मैया ने उनको गोद में उठाया क्योंकि जब बालक रूठ जाता है तब बालक को माँ गोद में ले करके दूध पिलाती है, तब बच्चा शान्त हो जाता है, ये सबसे बड़ी मिठाई है, ये सबसे बड़ा प्यार है माँ का व रोते हुए बच्चे को चुप करने का ये सबसे बड़ा अस्त्र है माता के पास | यशोदारानी ने भी यही काम किया, रोते हुए कन्हैया को गोद में उठा लिया और स्तनपान कराने लग गईं | इतने में कोई गोपी आयी थी नन्दभवन में श्रीकृष्ण का दर्शन करने के लिए और जैसे ही आई तो उसने देखा कि दूध उफन रहा था तो वह गोपी बोली – "अरी यशोदा ! अरी यशोदा !!" यशोदा मैया बोलीं – "अरी क्या है, क्यों हल्ला मचा रही है |" उस गोपी ने कहा – "दूध उफन रह्यो है मैया |" श्यामसुंदर को गोदी से उतारकर झट मैया दूध उतारने के लिए दौड़ी क्योंकि दूध का जलना बेटे की आयु के लिए हानिकारक माना जाता है, ऐसी कहावत है | यशोदा मैया को दूध इतना प्यारा नहीं था लेकिन पुत्र की आयु के लिए वह दौड़ी लेकिन कन्हैया को बड़ा गुस्सा आया कि दूध के लिए हमें उतार गयी गोद से और उतने में मधुमंगल लाल आये तथा बोले – "दादा, अरे भैया कन्हैया ! |" कन्हैया बोले – "अरे, मधुमंगल ! आ ऽ ऽ ऽ जा, का ह्वै रह्यो है |" अब दोनों बालक बात कर रहे हैं | मधुमंगल बोला – "रिसियाय रह्यो है तू कन्हैया, कछु बात है का |" कृष्ण बोले - "रिसियावे की बात ही है, मैंने मैया से पूछी कि मैं तुझे प्यारा हूँ या मोते ज्यादा कोई और चीज प्यारी है ? मैया ने कही कि लाला, तोते ज्यादा प्यारो तो कोई नहीं है दुनिया में लेकिन मोय गोदी से उतार के अभी दूध उतारवे चली गयी तो मै प्यारो हूँ कि दूध ?" मधुमंगल बोल्यो – "हाँ लाला, बात तो ठीक कह रह्यो है, मैया को तू काहे को प्यारो है, दूध प्यारो है |" अब बालक तो मूर्ख होता ही है और मधुमंगल जैसे मंत्री मिल गए, महामूर्खराज भोजनभट्ट, वह बोल्यो – "लाला ! मैया को तू प्यारो नाय |" कन्हैया – "तू तो बात साँची कह रह्यो है |" अब कन्हैया को और अधिक गुस्सा आई, बोले – "अच्छा तो मैं कहा करूँ ?" मधुमंगल – "कछु कर तू |" कन्हैया – "मैं इन सब दूध-दही के माट-मटका को फोड़ दऊँ, ये जो रखे हैं, मैया को ये ज्यादा प्यारे लगें, हमतेऊ ज्यादा |" मधुमंगल – "भाई लाला, तू एक काम कर, मैं चल्यो जाऊं तब तू फोर, फोर जरुर दे लाला क्योंकि तोते ज्यादा प्यारे ये सारे कैसे हो जायेंगे लेकिन मैं चल्यो जाऊं तब तू फोरियो |" कन्हैया – "जा सारे, तू तो बड़ो डरपोक है, ऐसे ही तू मेरे साथ चलेगो चोरी करवे |" मधुमंगल – "अच्छा भाई, तू नाराज मत हो, मैं बैठ जाऊँगो |" अब कन्हैया ने लोढ़ा उठा करके सभी माट-मटके फोड़ दिए | मैया ने सोचा कि देखें, अन्दर क्या हो रहा है ? इधर मधुमंगल ने देखा कि धार आ रही है दूध की, दही की, मक्खन की तो वह जमीन में मुँह लगाकर पीने में लग गया, उसने सोचा कि ये तो अच्छा मौका लग गया | तब तक यशोदा मैया आईं, उन्होंने देखा कि मधुमंगल जमीन में मुँह लगाकर पी रहा है तो बोलीं – अरे निपूते, ये का कर रह्यो है ? देखा तो उसका मुँह में दूध दही से सना हुआ था, मैया बोलीं - ये का कर रह्यो है ? मधुमंगल – "मैया, कोई बिल्ली तुम्हारे सब मटके फोड़ गयी, दूध-दही की धार बह रही थी तो मैंने सोचा कि मैं ब्राह्मण हूँ, मैं पी लूँ तो तेरो पुण्य ही तो लगेगो |" मैया – "अच्छा लेकिन फोड़े कौन ने, बिल्ली थोड़ी फोरेगी |" तब तक श्यामसुन्दर का हाथ पकड़कर मैया लायीं और मधुमंगल से पूछा – "बता, किसने फोड़े ?" मधुमंगल कन्हैया की तरफ देखे तो वह इशारे से मना करें कि चुप, बतइयो नहीं | फिर मैया ने चिल्लाकर पूछा - "बता, किसने फोड़े, नहीं तो मैं अभी तेरी गति बनाऊंगी |" अब मधुमंगल तो डर से काँपने लगा और बोला – मैया, बात ये है कि माट फूट गये | मैया – "फिर दयूं तोमे, बामन कहीं को, मैं ये नहीं पूछ रही हूँ कि फूट गये, ये बता कि कौन ने फोड़े?" मधुमंगल – "मैया,

फूट गये |" जब मैया ने जोर से उसे धमकाया तो मधुमंगल बोला – "कन्हैया ने फोड़े |" मैया – "या कन्हैया ने फोड़े?" | मधुमंगल – "हाँ |" अब तो मैया ने कन्हैया को रस्सी से बाँध दिया | बाँधने के बाद कन्हैया को सांटी लेकर डराने लगीं, डर के कारण कृष्ण आँख को ऊपर नहीं उठा रहे हैं | इस लीला को गोपियाँ गा रही हैं – बद्धान्यया.....| श्रीकृष्ण छिप गये हैं अतः उन्हें प्रसन्न करने के लिए गोपियाँ यह लीला गा रही हैं | यह प्रमाण है कि भगवान् की लीला गाओगे तो निश्चय ही उनके पास पहुँच जाओगे | गोपियाँ वैसा ही अभिनय कर रही हैं जैसे यशोदा जी कन्हैया को बांधते समय डरा रही थीं | वहाँ रस्सी तो है नहीं इसलिए माला से कन्हैया बनी गोपी को दूसरी गोपी बाँध रही है और ऊखल की जगह वहीँ पेड़ से उसे बाँध दिया | यह ठाकुर को प्रसन्न करने का सबसे सरल उपाय है | गोपियों ने गोपी गीत में कृष्णलीला का अनुकरण करके संसार को सिखाया कि यह कृष्ण को प्रसन्न करने और उनकी प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन है | इसे साधारण लोग समझ नहीं पाते | गान और अभिनय श्रीकृष्ण की प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ उपाय है | जब मैया ने कन्हैया को रस्सी से बाँध दिया और सांटी से डराने लगी तो भय के कारण कृष्ण ने अपना मुँह पीताम्बर से ढक लिया तो मैया आँख निकाल कर चिल्लाई- "क्यों रे ?" श्रीकृष्ण के छिप जाने पर गोपियाँ भी इसी लीला का अभिनय कर रही हैं | इसी बात को ब्रह्मा जी (श्लोक-३/९/१५ में) कह रहे हैं | जो लोग प्राण छोड़ते समय विवश हो करके भी भगवान् के नाम को ग्रहण करते हैं, उनकी लीला को सोचते हैं, वे अनंत जन्मों के पापों को एक क्षण में जला करके (ख़ाक करके) निरावरण ब्रह्म की प्राप्ति करते हैं | यह एक सिद्धांत है | गोपियों ने अपने आचरण के द्वारा यह सिखाया कि हमने कृष्ण के गीत गाये तो वे हमारे सामने आ गए | गोपी-गीत का यह रहस्य है कि तुम कृष्ण की लीलाओं को गाओगे तो वे तुरंत तुम्हारे सामने आ जायेंगे, सर्वोत्तम मार्ग यही है | रासलीला के पांच अध्याय भागवत के पांच प्राण हैं |

(श्रीमद्भागवतजी १०/२९/१)

भगवानपि ता रात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः ।
वीक्ष्य रन्तुं मनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः ॥ १ ॥

'भगवानपि' भगवान् होते हुए भी, भगवान् को किसी स्त्री की या भोग की जरूरत नहीं है लेकिन भगवान् होते हुए भी, **'ता रात्रिः'** उन रातों को, कैसी रातें थीं ? **'शरदोत्फुल्लमल्लिकाः'** शरदकाल में खिली हुई मल्लिका (बेला के फूल) | बेला के फूल शरद में नहीं होते, गर्मी में होते हैं लेकिन इस पहले ही श्लोक में बता दिया गया है कि शरद ऋतु में सभी ऋतुएँ, सभी ऋतुओं की रात्रियाँ आ गयीं थीं | इसीलिए ग्रीष्मऋतु के फूल को शरदऋतु में खिला दिया | **'उत्फुल्ल'** खिली हुई थीं, **'मल्लिकाः'** बेला; ऐसी रातें थीं | **'वीक्ष्य'** देखकरके, **'रन्तुम्'** रमण करने के लिए, **'मनश्चक्रे'** मन किया, संकल्प किया, **'योगमायामुपाश्रितः'** योगमाया का आश्रय लेकर | 'योगमाया' अघटित घटना पटीयसी है, जो काम नहीं घटता है, उसे भी कर देती है, यह साधारण माया नहीं है, माया कई तरह की होती है – एक है मोहिनी माया, जिसके कारण हमलोग माया में फँसे हुए हैं और एक होती है भगवान् की दिव्य माया, जो जीवों का भगवान् से योग कराती है, यहाँ (रासलीला करने के लिए) उसी योगमाया का भगवान् ने आश्रय लिया है | .....क्रमशः

तुमने सुना होगा कि एक बार अमेरिका ने जापान में बम गिराया था। जो व्यक्ति हवाई जहाज से बम को गिराने के लिए गया था, जब उसने बम गिरा दिया तो वो दूर से दूरबीन में देखने लगा कि क्या हुआ? वहाँ से उसने देखा कि लाखों लोग तड़फ रहे हैं। जहरीली गैस से लोगों का दम घुट रहा है और वे तड़प-तडप कर मर रहे हैं तो यह देखकर वह व्यक्ति पागल हो गया क्योंकि उसने विश्व-द्रोह किया था। **यस्य नाहङ्कृतो ..... हन्ति न निबध्यते ॥**

कामविजयीलीला 'महारास'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'श्रीराधासुधानिधि' (६/५/१९९८) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी गोपिकाजी, मानमन्दिर, बरसाना

जब लीलाकाल में श्रीकिशोरीजू का वसनांचल उड़ा, उनके अंचल की हवा श्रीकृष्ण को लगी तो वह अपने को धन्य मानने लगे | श्रीजी का अंचल कब उड़ा, इस विषय में अनेकों रसिकों को अनेक ढंग से अनुभव हुआ | इस अंचल-लीला में बहुत-सी लीलाएँ होती हैं | लीला के अनुसार ही उसका नाम होता है, किसी लीला का नाम आभूषण पर पड़ता है, किसी लीला का नाम किसी घटना के ऊपर होता है | लीलाओं के अलग-अलग नाम पड़ते हैं, जैसे - जिस लीला में नृत्य-गान होता है, उसका नाम हुआ रासलीला, जिस लीला में श्रीजी झूला झूलती हैं, उस लीला का नाम हुआ झूलन लीला, जिस लीला में किशोरी जी होली खेलती हैं, उस लीला का नाम हुआ होरी लीला, जब वह जल विहार करती हैं, उस लीला का नाम हुआ जलविहार लीला, नौका-लीला | इसी प्रकार घटनाओं के ऊपर भी लीलाओं के नाम पड़ते हैं जैसे जब श्रीकृष्ण के उदर में दाम (रस्सी) बाँधी गयी तो उस लीला का नाम हुआ दामोदर लीला, यह एक ऐसी घटना हुई जो आज तक कभी नहीं हुई थी | आज तक भगवान् को कोई बाँध नहीं पाया किन्तु यहाँ हठ करके यशोदा मैया ने उन्हें बाँध दिया | यह एक बहुत ही अलग ढंग की घटना घटी और इस लीला का नाम पड़ गया – दामोदर लीला | इसी तरह जब गोपियों के वस्त्रों की चोरी की गयी तो वस्त्रों के ऊपर इस लीला का नाम पड़ा – चीरहरणलीला | इस प्रकार वंशी, आभूषणों और घटनाओं के कारण लीलाओं के नाम बदलते रहते हैं | अब यहाँ पर अंचल-लीला की चर्चा चल रही है | भगवान् की लीला तो अनंत है, एक ही लीला कई प्रकार से होती है, जैसे - रास ही अनेक प्रकार का है, नृत्य-लीला भी विविध प्रकार की है, गानलीला में अनेकों प्रकार का गान है | एक ही लीला अनंत प्रकार की है | चीरहरण लीला भी जाने कितने प्रकार की है | भगवान् की लीलाएं इतनी विस्तृत हैं कि यदि शेषजी भी अपने सहस्त्रों मुखों तक अनंत काल तक उनका वर्णन करें तब भी उसका अंत नहीं है | हम लोग तो छोटे से जीव हैं | कभी तो चीर हरण लीला में श्रीजी उपस्थित रहती हैं और कहीं नहीं भी रहती हैं, कहीं इस लीला में केवल कुमारिकाएं ही हैं तो कहीं अन्य गोपिकाएं भी चीर हरण लीला में हैं | इस प्रकार एक-एक लीला के बहुत से भेद हैं और संत,रसिक तथा भक्त लोग, जो लीला के मर्मज्ञ हैं, लीला के प्रेमी हैं, उसे गाते हैं और उसका आनन्द लेते हैं | जिनको भगवान् की लीलाओं में रस नहीं मिलता है, उनकी बात छोड़ देनी चाहिए | उनकी तो चर्चा करना भी गलत है | श्रीराधिका रानी और श्रीकृष्ण की प्राप्ति का सबसे सरल साधन लीला गान ही माना गया है | यद्यपि कुछ आचार्य कहते हैं कि पहले लीला गान नहीं होना चाहिए क्योंकि मनुष्य का अंतःकरण अशुद्ध रहता है इसलिए पहले नाम साधन होना चाहिए परन्तु ब्रजवासियों की कहावत है कि कब बाबा आवे और कब घंटा बाजे ? लाखों वर्षों का, अनंत काल का गंदा चित्त पता नहीं कब शुद्ध होगा और इसको शुद्ध करने के चक्कर में हम लीला ही न गावें, इससे क्या मतलब है, ये तो वही बात है कि 'कब बाबा आवे और कब घंटा बाजे' इसलिए पहले ही घंटा बजा लो, पहले ही लीला गा लो, उसमें कोई नुक्सान नहीं है | भगवान् की लीला तो सदा ही मंगलकारिणी है | श्रीकृष्णलीला के बारे में ऐसा सोचना कि यह मन में गंदगी पैदा करेगी, यह तो नास्तिकता है क्योंकि सृष्टि के अनंत जीव कृष्णलीला नहीं गा रहे हैं तो क्या ये जितेन्द्रिय हो गये और क्या ऐसी व्यर्थ बात कहने वाले जितेन्द्रिय हैं | 'श्रीकृष्णलीलागान को मन में गंदगी उत्पन्न करने वाला' कहने वालों की तो और बुरी हालत है क्योंकि वे निंदा में डूबे हैं, नीरसता में डूबे हुए हैं | गोपियों ने गोपीगीत में कहा था –

प्रहसितं प्रिय प्रेमवीक्षणं विहरणं च ते ध्यानमङ्गलम् ।

रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/३१/१०)

हे श्यामसुन्दर ! शरद की सुंदर चाँदनी में आपका विहार कितना सुंदर है, यमुना का किनारा है, वन में चारों ओर चाँदनी दिव्य ज्योति फैला रही है, श्वेत चाँदनी की तरह यमुना की रेत है, श्वेत श्रृंगार है, श्वेत आभूषण हैं, ऐसा लगता है कि चाँदनी ने ही सब गहनों का रूप बनाया है, चाँदनी ही जामा, पटका, लंहगा-फरिया आदि पहनकर आई है और ऐसे में उज्जवल विहार हो रहा है | हे कृष्ण ! तुम्हारा हँसना, तुम्हारी प्रेम भरी चितवन, तुम्हारा विहार – इन सबका ध्यान करने पर ये मंगल करते हैं, नुकसान नहीं करते हैं | इसी विश्वास से हम लोग कृष्ण लीला गाते हैं | विहार का मतलब है श्रृंगार रस | गोपियाँ श्रीकृष्ण से कहती हैं कि तुम जो एकांत में हमसे परिहास, ठिठोली करते हो, छेड़छाड़ करते हो, हे कपटी, वह हमारे मन में क्षोभ उत्पन्न करता है | शुकदेवजी ने यहाँ तक कहा कि श्रीकृष्ण की ऐसी मीठी-मीठी प्रेम की लीलाओं के लिए ब्रह्मा-शिवादि भी तरसते हैं | रासपंचाध्यायी के अंत में शुकदेवजी कहते हैं –

विक्रीडितं व्रजवधूभिरिदं च विष्णोः
श्रद्धान्वितोऽनुश्रृणुयादथ वर्णयेद् यः ।
भक्तिं परां भगवति प्रतिलभ्य कामं
हृद्रोगमाश्वपहिनोत्यचिरेण धीरः ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/३३/४०)

भगवान् की जो यह मीठी रास लीला है, यह विशेष क्रीडा है, ये साधारण क्रीड़ा नहीं है | इसे विक्रीडितं इसलिए कहा क्योंकि इस क्रीड़ा के लिए तो स्वयं श्रीकृष्ण भी तरसते हैं, गोपीजन भी तरसती हैं | विक्रीडितं - यह विशेष क्रीड़ा है, रसभरी है, आनंद और प्रेम भरी है, उमंग-उल्लास भरी है, चोज भरी है, अनुराग भरी है अतः यह विक्रीडा है अथवा किसी आचार्य ने कहा कि यह विक्रीडितं है, इसे खेलने वाले प्रेम में बिक गये, भगवान् भी बिक गया, जो सबका बाप था, सब बिक गये | यह प्रेम का बाजार है | शुकदेव जी कहते हैं कि ब्रजगोपियों के साथ भगवान् श्रीकृष्ण की रासलीला को जो श्रद्धा से सुनता है, जो वर्णन करता है, उन दोनों को ही बराबर लाभ मिलता है | यह कोई घाटे का सौदा नहीं है कि कहने वाले को ज्यादा लाभ हो जाये, सुनने वाले को कम लाभ मिले | सुनने वाले को पहले लाभ मिलेगा और उसे राधाकृष्ण के चरणों में पराभक्ति की प्राप्ति होती है | परा का मतलब कि उससे आगे कुछ नहीं है | इस लीला को सुनने से हृदय का काम रोग भी नष्ट हो जाता है | जो मूर्ख लोग हैं, वे समझते हैं कि इस लीला को गाने से काम रोग बढ़ता है | शुकदेव जी ने कहा कि इस रासलीला को गाने से काम नष्ट हो जाता है | अरे मूर्खो, भगवान् की लीला के बारे में विपरीत बात क्यों सोचते हो ? एक उदाहरण है कि कोई गुड़ खाता है और गुड़ किरकिरा है, अब किसी बच्चे से कहो कि गुड़ मत खाओ, गुड़ नुक्सान करता है तो वह बालक रोयेगा और कहेगा कि मेरा गुड़ खाना बंद कर दिया | महात्माओं ने कहा है कि भगवान् की रासलीला रसायन उपचार है | जब बच्चे से आपने कहा कि गुड़ खाना छोड़ दो तो बच्चे ने कहा कि मैं गुड़ खाना नहीं छोडूंगा क्योंकि यह बड़ा मीठा है | मना करने पर वह रोता है क्योंकि उसको गुड़ खाने की आदत पड़ गयी है | किसी चतुर व्यक्ति ने उस बालक के पिता से कहा कि तुम इसका गुड़ खाना इसलिए छुड़ा रहे हो क्योंकि यह किरकिरा है इसलिए इसको गुड़ से अच्छी चीज दे दो | गुड़ किरकिरा है, इसमें कंकड़ है, इससे पथरी हो जायेगी अतः उस चतुर व्यक्ति ने बालक से कहा कि यह रसगुल्ला है, अब बताओ कि तुम रसगुल्ला खाओगे कि गुड़ खाओगे | रसगुल्ला देखके बालक अपने आप ही गुड़ फेंक देगा, बिना कहे फेंक देगा; वैसे ही यह भगवान् की मधुरलीला है, यदि मनुष्य इसका स्वाद चख ले तो अपने आप ही जहरीला काम रोग नष्ट हो जाता है, जल्दी ही नष्ट हो जाता है | सबसे शीघ्र संयमी बनने का उपाय यही है कि कृष्णलीला का सेवन किया जाय | जो लोग नासमझ हैं, श्रद्धाहीन हैं, जिनका मन स्वयं ही गन्दा है, वे ही लोग इस तरह की व्यर्थ बातें किया करते हैं | गाँव में एक कहावत है – 'मेव जाने आपन टेव |' जो

मेव होता है, वह अपनी ही टेव जानता है, अपने ही हिसाब से देखता है | वैसे ही जो गंदे लोग होते हैं, उनको सब जगह गंदगी ही दिखती है | भगवान् की मधुरलीला में तो उज्जवल प्रेम है, इसमें कोई स्वार्थ नहीं है, इस लीला में जो मान किया जाता है, वह वैसा मान नहीं है जैसे संसार में लोग रूठ जाते हैं | श्रीराधामाधव की रसमयी लीलाओं को समझना बहुत ही कठिन हैं | अब राधारानी की अंचल लीला को समझते हैं - अंचल लीला भी ब्रज के अनेकों स्थान पर अनेकों प्रकार की हुई हैं | एक प्रकार की अंचल लीला ये है कि एक बार श्रीनन्दलाल प्रातःकाल उठकर सोचने लगे कि आज सबसे पहले श्रीराधारानी का दर्शन किया जाय जैसे भक्त लोग प्रातःकाल मंगला आरती का दर्शन करते हैं | मंगला आरती का बहुत बड़ा महत्व है | मंगल आरती मंगल भोर मंगल दर्शन | मंगला आरती का मतलब है कि प्रातःकाल उठकर सबसे पहले ठाकुर जी का दर्शन किया जाय | कभी-कभी लोग कहते हैं कि आज सवेरे किस मनहूस का मुख देखा कि दिनभर खाने को ही नहीं मिला | अस्तु, एक दिन श्यामसुंदर जल्दी उठे और विचार करने लगे कि आज सबसे पहले जाकर राधारानी का दर्शन करना चाहिए | ऐसा विचार करके नन्दलाल नंदगांव से बरसाने के लिए चल दिए | "नन्दनंदन वश कीन्हे राधा भवन गए चित नेक न लागत |" नंदलाल अपने मणिमय नन्दभवन में सो कर उठे लेकिन उनका मन प्रसन्न नहीं था | क्योंकि वह राधारानी के वश में हो गए हैं | "श्यामा श्याम रूप मंदिर सुख |"इस पद का बड़ा ही सुन्दर भाव है जैसे भक्तलोग प्रातःकाल ठाकुर जी का दर्शन करने जाते हैं वैसे ही श्यामसुंदर भी रूपमंदिर में आ रहे हैं | सूरदास जी ने ऐसा शब्द रखा है, वे कहते हैं कि लाड़लीजी के महल का नाम है रूपमंदिर, जहाँ करोड़ों चंद्रमाओं से भी सुन्दर श्रीजी का रूप चमकता रहता है | उस वृषभानुभवन को सूरदासजी ने रूपमंदिर कहा है | 'श्रीश्यामाजू' श्यामसुंदर का रूप मंदिर हैं, जहाँ आकर श्यामसुंदर रूप का दर्शन करते हैं | अन्तर्गत सो नेक न व्यागत – इसका भाव ये है कि जब श्यामसुन्दर इस रूप मन्दिर में आते हैं तो उनको कोई व्यथा नहीं होती है क्योंकि बरसाने में आनंद है | जो रस बरस रह्यो बरसाने सो रस तीन लोकन में नाहीं | बरसाने में राधिका रानी सदा विराजती हैं इसीलिए श्रीकृष्ण वैकुण्ठ छोड़कर, ऐश्वर्य छोड़कर यहाँ आते हैं | ऐश्वर्य में सुख नहीं है | सुख प्रेम में है | याद रखो, संसार में किसी को यदि सुख मिला है तो प्रेम में मिला है, ऐश्वर्य में सुख नहीं है | धन के लिए भाई-भाई एक दूसरे को मार डालते हैं परन्तु जब आपस में प्रेम होता है तो सूखी रोटी भी सुख देती है | ब्रजभूमि के प्रेम के कारण भगवान् वैकुण्ठ को छोड़कर यहाँ आते हैं | प्रेम इतनी बड़ी चीज है | जा कारण बैकुंठ बिसरगत, निज स्थल मन में नहीं आवत – सुंदर वैकुण्ठ धाम को छोड़कर श्रीकृष्ण ब्रज में करील के काँटों में घूमते हैं और अनंत ऐश्वर्य को छोड़कर ब्रज में गोबर उठाते हैं | यहाँ आकर कन्हैया वैकुण्ठ भूल जाते हैं | ऐसा केवल सूरदासजी ने ही नहीं कहा है, भागवत में भी ऐसा लिखा है - **एवं निगूढात्मगतिःस्वमायया गोपात्मजत्वं चरितैर्विडम्बयन् । रेमे रमालालितपादपल्लवो ग्राम्यैः समं ग्राम्यवदीशचेष्टितः ॥** (श्रीमद्भागवतजी १०/१५/१९)

ब्रज में श्यामसुंदर गोपलीला, गँवार लीला कर रहे हैं | यहाँ वह रम गया और वैकुण्ठ को भूल गया | वैकुण्ठ में लक्ष्मीजी कन्हैया के चरण दबाती थीं लेकिन कन्हैया यहाँ आकर ब्रज में रम गया, गंवारों के साथ रहकर गँवार बन गया और वैकुण्ठ भूल गया | गँवार बनने में कितना फायदा है, इसलिए गँवार बनना चाहिए, कौन-सा गँवार, जिस गँवार के कारण कृष्ण भी ब्रज में आकर गँवार बन गये, वह प्रेममय गँवार है | इस गँवारपने में कोई बनावट नहीं है | ग्वालबाल कृष्ण से कहते हैं – "अरे नन्द के ! अरे कामरी दीजो रे |" यहाँ बड़ेपन-छोटेपन का कोई भेद नहीं है, प्रेमलीला इस ब्रज में अगाध रूप से चल रही है | ब्रज की सभ्यता को 'ग्राम्यवदीशचेष्टितः' अर्थात् गँवार इसलिए कहा गया क्योंकि यहाँ कृष्ण को कोई भगवान् नहीं कह रहा है कि हटो-हटो, भगवान् आ गये, भगवान् आ गये, ऐसा झगड़ा यहाँ नहीं है | कृष्ण के आने पर बृजवासी कहते हैं – "कौन आ रहो है, अरे नन्द को आ रहो है, कन्हैया, बैठ जा- बैठ जा |" यह गँवार सभ्यता है |....क्रमशः

भगवत्प्रेम-भाजक 'श्रीमाधवदासजी'

श्रीबाबामहाराज के एकादशी-सत्संग से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी मधुराङ्गनाजी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीमाधवदासजी इतने बड़े भक्त हुए हुए हैं कि स्वयं भगवान् ने बीमारी में इनके मल को धोया | यह भक्ति की शक्ति है, भक्ति होनी चाहिए | माधवदासजी ब्रज के रहने वाले थे | ये युवावस्था में जगन्नाथ पुरी चले गये थे | इनकी भक्ति के कारण जगन्नाथजी ने इनसे इतना प्यार किया कि अपने मन्दिर में ही रख लिया | इसलिए वे जगन्नाथजी के मन्दिर में ही रहे किन्तु इन्हें ब्रज की याद आयी तो अंतिम समय ये ब्रज में चले आये | उस समय इनकी उम्र बहुत अधिक हो गयी थी | उस समय वृन्दावन में स्वामी हरिदासजी भी थे, माधवदासजी का स्वामी हरिदास जी के साथ मिलन भी हुआ था | वृन्दावन से थोड़ी दूर पर माधवदासजी का गाँव भी था, अतः उन्होंने सोचा कि अपनी माँ से भी मिल लूँ, पता नहीं वह जिन्दा भी है कि मर गयी है | जब माँ से मिलने गये तो वह जीवित थी और बहुत बूढ़ी हो गयी थी | उसको ठीक से दिखाई भी नहीं देता था | मनुष्य जब बहुत वृद्ध हो जाता है तो उसे आँख से दिखाई भी नहीं देता | माधवदासजी जब अपनी माँ से मिलने गये तो वह बूढ़ी माँ घर में अकेली थी | माधवदासजी ने घर के भीतर जाकर अपनी माँ का चरण स्पर्श किया तो माँ को नहीं पता चला कि कौन पाँव छू रहा है, उसने पूछा – "अरे भाई ! कौन है जो मेरा पाँव छू रहा है, तू कौन है ?" माधवदासजी अपनी माँ के पाँव पकड़कर रोने लगे क्योंकि अपनी माँ से बिछुड़े उन्हें पचासों साल हो गये थे, इतने दिनों बाद माँ से मिले थे और देखा कि वह जीवित है इसलिए वह रोने लगे | उन्होंने सोचा कि देखो मैं तो साधू बन गया और मेरी माँ अकेली है, इसकी सेवा करने वाला भी कोई नहीं है | आज यह बुढ़िया अकेले घर में पड़ी है और इसका कोई नहीं है | इसलिए वह रो पड़े और सोचने लगे कि यदि मैं घर में होता तो अपनी माँ की सेवा करता | आज मैं नहीं हूँ तो यह घर में अकेली है | उनके रोने की आवाज सुनकर उनकी माँ बोली – "अरे तू क्यों रोता है, कौन है तू, बोलता क्यों नहीं ?" माधवदास जी कुछ नहीं बोले केवल रोते ही रहे | बहुत देर रोने के बाद माधवदासजी बोले – "माँ ! मैं तेरा माधव हूँ |" बचपन में माँ इनको मधुआ कहती थी | अतः अपना परिचय दिए जाने पर माँ बोली – "अरे मधुआ ! बेटा, तू मधुआ तो नहीं है |" माधवदासजी ने पूछा – "अरे ! मैं मधुआ क्यों नहीं हूँ माँ?" बुढ़िया बोली – "अरे ! मेरा मधुआ कहीं लौट सकता है, तू तो कोई और है, नकली है | मेरा मधुआ असली है, उसको भगवान् मिल गए हैं, अब वह भगवान् के पास है, भला, अब क्या वह भगवान् के पास से लौटेगा ? तू मेरा बेटा नहीं है | मेरा मधुआ नहीं लौटेगा, मेरा मधुआ नहीं लौटेगा | अब माँ माधवदास को उन्हीं का चरित्र सुना रही है और कह रही है कि तू नकली मधुआ है | मेरा मधुआ लौट नहीं सकता | मेरे मधुआ को तो साक्षात् भगवान् मिल गये हैं | (जो माधवदासजी घर से निकलने के बाद श्रीजगन्नाथजी को पा गए थे |) जब माधवदास जी पुरी गये तो वहाँ कुछ दिन तक भूखे रहे थे और मन्दिर में जगन्नाथजी का दर्शन करके एक कुञ्ज में चले गये थे | तब भगवान् जगन्नाथ ने लक्ष्मी जी से कहा – "जाओ, मेरा भक्त भूखा है, उसके पास मेरे भोग का थाल ले जाओ और उसे मेरा प्रसाद खिलाओ |" भगवान् के आदेश से लक्ष्मीजी माधवदास जी के पास भोग का थाल ले गयीं | लक्ष्मीजी ने देखा कि माधवदास जी रात्रि में एकांत कुञ्ज में कृष्ण-कृष्ण कहते हुए प्रेम से नाच और गा रहे थे | लक्ष्मीजी ने उनके पास भोग का थाल रख दिया किन्तु उनको कुछ पता नहीं चला | तब लक्ष्मीजी ने अपनी कांति से करोड़ों बिजली के समान चमक पैदा की | माधवदास जी ने आँख खोलकर देखा कि कोई चली गयी | माधवदास जी अपने सामने सोने का थाल देखा तो भोजन किया | वह सोचने लगे कि पता नहीं कौन यह थाल रख गया है | इसके बाद वह फिर से भजन में

तल्लीन हो गये | मन्दिर में पुजारियों ने देखा कि जगन्नाथ जी के भोग का सोने का थाल चोरी हो गया | सिपाही लोग उस थाल की तलाश में बाहर गये, ढूँढ़ते हुए एक जगह पहुंचे तो एक सिपाही ने कहा कि वह थाल तो एक साधु के पास है | लोग गये और पकड़ कर उन्हें मन्दिर में लाये तो पंडा-पुजारियों ने माधवदास जी की खूब पिटाई की और वह पिटते रहे | अगले दिन जब पुजारी लोग जगन्नाथ जी को स्नान करा रहे थे तो देखा कि उनके सारे शरीर पर चोट के निशान थे और खून बह रहा था | पुजारी लोग रोने लगे और पूछा – "प्रभु, यह क्या ?" जगन्नाथ जी बोले – "तुम लोगों ने मेरे भक्त माधवदास को पीटा है, उसका और मेरा शरीर एक ही है, तुम लोगों ने माधवदास को नहीं, मुझे पीटा है |" भगवान् की बात सुनकर सब लोग माधवदास जी के पास गये और उनसे क्षमा माँगी तथा उन्हें मन्दिर में जगन्नाथजी के सामने लेकर आये | भगवान् ने माधवदास जी से कहा कि तुम मेरे मन्दिर में ही मेरे साथ रहो | माधवदास जी बोले – "महाराज ! मैं आपके साथ मन्दिर में कैसे रह सकता हूँ ? मुझे तो मल-मूत्र त्याग की भी आवश्यकता पड़ेगी |" भगवान् ने उनके ऊपर ऐसी कृपा कर दी कि उन्हें मल-मूत्र नहीं होता था और तब वह भगवान् जगन्नाथ के मन्दिर में ही सदा रहे | ये सब बातें माधवदास जी की माँ ने सुनी थीं अतः वह अपने बेटे का चरित्र सुनाने लगी और माधवदास जी से कहने लगी कि तू नकली है | असली मधुआ पुरी में रहता है, वहाँ से वह यहाँ क्यों लौटेगा ? वह कहने लगी – जगन्नाथजी जिसने पाए, लक्ष्मीजी से थाल पठाए | जिसके हित निज को पिटवाये | मन्दिर संग साथ बसवाये | ऐसा मेरा मधुआ है इसलिए – मेरा मधुआ नहीं लौटेगा, मेरा मधुआ नहीं लौटेगा | अरे जो भगवान् की शरण में गया वह क्या कभी लौटता है ? माधवदास जी जब भगवान् के आदेश से जगन्नाथ जी के मन्दिर में रहने लगे तो एक दिन उन्होंने भगवान् से कहा - "प्रभो ! यहाँ बहुत से लोग मुझे जान गये हैं, वे मुझे दंडवत करते हैं इसलिए मैं यहाँ नहीं रहूँगा |" ऐसा कहकर वे कहीं अलग चले गये | उनके पास ओढ़ने के लिए कुछ नहीं था | एक बार जाड़े में वह ठिठुर रहे थे तो जगन्नाथजी ने जाकर उन्हें अपनी रजाई ओढ़ा दी | इसीलिए माधवदास जी की माँ बोली – जिसे ओढ़ाई अपनी रजाई | एक बार माधवदास जी को संगृहणी का रोग हो गया, इस रोग में बार-बार मल त्याग होता है तब वे समुद्र के किनारे जाकर पड़ गये जिससे कि कोई हमारी सेवा न कर सके और यहीं मैं मरूँगा | एक बार आधी रात को वह समुद्र के किनारे पड़े थे, बार-बार मल निकलने से वह बेहोश हो गये थे | थोड़ी देर बाद उन्हें ऐसा लगा कि कोई उनका मल धो रहा है | आँख खोलकर उन्होंने देखा कि एक दस साल का लड़का उनका मल धो रहा था तो वह सोचने लगे कि आधी रात को यहाँ समुद्र किनारे कौन आएगा, इस समय तो इतनी तेज समुद्र की गर्जना होती है कि भय लगता है | माधवदास जी ने उस लड़के से पूछा कि तुम कौन हो ? वह लड़का कोई और नहीं, स्वयं भगवान् थे किन्तु माधवदास जी के पूछने पर उन्होंने झूठ बोल दिया कि मैं यहीं आसपास का रहने वाला हूँ | माधवदास जी ने उस लड़के का हाथ पकड़ लिया और बोले – "नहीं, तुम झूठ बोलते हो, सच बताओ, तुम कौन हो, लगता है तुम वही हो जिसको मैं बुलाता हूँ |" ठाकुर जी बोले – "हाँ माधवदास जी ! मैं कृष्ण हूँ |" माधवदास जी बोले – "प्रभो ! आपने ऐसा क्यों किया, मेरे गंदे शरीर की गंदगी को धोया, इससे मुझे बहुत कष्ट है |" ठाकुरजी बोले – "मैंने अपनी प्रसन्नता के लिए ऐसा किया है | मैं यदि चाहता तो तुम्हारा रोग मिटा देता लेकिन मुझे भक्तों की सेवा करने में आनंद आता है |" देखो, सेवा ऐसी चीज है | जिसके जीवन में सेवा नहीं आयी उसे भक्ति तो कभी मिल ही नहीं सकती चाहे कितनी ही माला क्यों न फेर लो | चैतन्य चरितामृत में कृष्णदास कविराज जी ने लिखा है – कोटि जन्म कोई यदि करे कृष्ण कीर्तन, तऊ नहि पाये कृष्ण प्रेम धन | जिसके अंदर सेवा नहीं है उसे कुछ नहीं मिलना है, चाहे तुम भजनानंदी के बाप बन जाओ | इसीलिए मैं कहता हूँ कि सभी को ब्रज की सेवा करनी चाहिए | सेवा

की महिमा देखो कि स्वयं भगवान् ने अपने भक्त की सेवा की | जिसे ओढ़ाई अपनी रजाई, बीमारी में कुँवर कन्हाई | जिसकी सेवा स्वयं कराई, माता जैसी मलहि धुआई | जैसे माता अपने छोटे बच्चे का मल धोती है, उसी प्रकार भगवान् ने भी माधवदास जी का मल धोया | अंधी बुढ़िया ने माधवदास जी से कहा कि वह मधुआ जिसकी भगवान् ने सेवा किया, वह कहीं लौट सकता है, तू तो कोई और है, झूठा है | मेरा मधुआ नहीं लौटेगा, मेरा मधुआ नहीं लौटेगा | एक बार जगन्नाथ पुरी में माधवदास जी को हराने के लिए भारत का बहुत बड़ा पंडित गया और उनसे बोला कि मुझसे शास्त्रार्थ करो | माधवदास जी ने तुरंत अपनी हार मान ली क्योंकि भक्त लोग किसी से लड़ते-झगड़ते नहीं हैं | उसने एक विजयपत्र खोला और बोला कि इस पर लिख दो | माधवदासजी ने लिख दिया कि 'पंडितराज जीते और माधवदास हारे' | अब तो वह पंडित काशी के विद्वानों को दिखाने गया क्योंकि माधवदास जी बहुत बड़े विद्वान् थे | काशी में जाकर उसने पंडितों से कहा कि मैंने माधवदास को हरा दिया, ऐसा कहकर उसने इसके प्रमाण स्वरूप वह पत्र पंडितों की सभा में दिखाया | जब वह पत्र खोला गया तो उसमें लिखा था – 'माधवदास जीते, पंडितराज हारे' | भगवान् की इच्छा से अक्षर उलट गये | अब तो काशी के पंडितों ने उसे बहुत धिक्कारा – "अरे, तू पाखंडी हारकर आया है और कहता है कि मैंने माधवदास जी को हरा दिया | अब देख इस पत्र में क्या लिखा है ?" पंडित बोला – "माधवदास ने मेरे साथ छल किया है | वह जादूगर है, अभी पुरी जाकर उसे हराके आता हूँ |" वह पंडित फिर से पुरी में माधवदास जी के पास गया और उनसे बोला – "तुमने मेरे साथ छल किया, फिर से मेरे साथ शास्त्रार्थ के लिए बैठो |" माधवदास जी बोले – "मैं तो दस बार लिख दूँगा कि मैं हारा |" पंडित बोला – "नहीं, मैं कल तुमसे शास्त्रार्थ करूँगा |" ऐसा कहकर वह चला गया तब तक ठाकुरजी एक बालक का रूप बनाकर उसके पास पहुँच गये और बोले – "मैं माधवदास जी का चेला हूँ, पहले मुझसे शास्त्रार्थ करो |" पंडित बोला कि जब तेरा गुरु ही मुझसे शास्त्रार्थ नहीं कर सकता तो तू क्या करेगा ? ठाकुरजी बोले – गुरु की बात छोड़ो, पहले चेला से भिड़ो | पंडित बैठ गया शास्त्रार्थ करने लेकिन वे तो ठाकुर जी ठहरे, उन्होंने दस मिनट में ही पंडित के अंजर-पंजर ढीले कर दिए | उससे ठाकुरजी के प्रश्नों का जवाब ही नहीं देते बना | जैसे ही वह उत्तर देता, ठाकुरजी उसे काटकर दूसरा प्रश्न पूछते |अब पंडितजी तो घबरा गये | वहाँ बहुत बड़ी सभा जुड़ी थी | जब पंडित ठाकुरजी के प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका तो उन्होंने उसे जोर से फटकारा – "अरे पंडित ! बोलता क्यों नहीं है, तेरी आवाज कैसे बंद हो गयी, तू तो कह रहा था कि मैं ही जीतूँगा |" पंडित बोला – "मैं लिख देता हूँ कि मैं हारा |" उसने एक कागज पर लिख दिया – "माधवदास जी का चेला जीता और मैं हारा |" ठाकुरजी बोले – "ऐसे नहीं माना जायेगा | मैंने पहले ही कहा था कि जो हारेगा, उसे गधे पर बिठाकर, उसका मुँह काला किया जायेगा और जूते का छत्र लगाकर पूरे गाँव में घुमाया जायेगा | अब तुम बोलो, हारे कि नहीं हारे |" पंडित की तो बोलती ही बंद हो गयी | सबने कहा – "पंडित हार गया, हार गया |" ठाकुरजी ने कहा – "अब गधे को लाओ |" गधा लाया गया और पंडित को उस पर बिठाकर, मुँह काला किया गया तथा जूतों का छत्र लगाकर पूरी बस्ती में घुमाया गया | जब ये सब तमाशा हो रहा था, उसी समय माधवदास जी समुद्र से नहाकर आ रहे थे | उन्होंने पंडितजी की ऐसी हालत देखकर पूछा – "अरे पंडितजी ! आपकी ऐसी दशा कैसे हो गयी ?" पंडित बोला – "आपके चेले ने मेरी यह दशा की है, ऐसी लज्जाजनक जिन्दगी से तो मैं मरना अधिक अच्छा समझता हूँ |" माधवदास जी ने कहा कि मेरा चेला तो कोई नहीं है | पंडित बोला – "अरे, वही दस साल का लड़का ही तो आपका चेला है |" माधव दासजी भगवान् की लीला समझ गये और बोले – "अरे, वह तो प्रभु थे | पंडितराज, तुम्हारे तो भाग्य खुल गये कि तुम्हें प्रभु का दर्शन मिला |" ऐसा कहकर माधवदास जी सबके सामने पंडित के चरणों में गिर पड़े और सबसे कहने लगे – "इन्हें

छोड़ दो भाई, ये तो पंडितराज हैं | इनका भाग्य खुल गया, इन्हें साक्षात् भगवान् ने आकर हराया |" माधवदास जी की बात सुनकर सभी लोग घबरा गये और पंडितजी को गधे पर से उतार दिया गया | माधवदास जी ने कहा – "पंडितजी धन्य हैं, इनके भाग्य खुल गये जो इनके लिए स्वयं भगवान् आये |" ऐसे कहकर माधवदास जी ने सबके सामने पंडितजी का सम्मान स्थापित कर दिया | माधवदास जी की सारी कथा सुनाकर उनकी अंधी माँ उनसे कहने लगी – अरे, तू तो नकली मधुआ है, मेरा असली मधुआ तो ऐसा है | जा हित चेला स्वयं बने हरि | जिनके लिए स्वयं भगवान् चेला बन गये | हम हारे को जीते में करि | फेर हराए शास्त्र अर्थ करि | अभिमानी को काला मुख करि | माधवदास जी की माँ बोली – ऐसा मेरा मधुआ है, उसे तो भगवान् मिल गये, तू तो नकली मधुआ है | वह अब नहीं लौटेगा | मेरो मधुआ नहीं लौटेगा, मेरो मधुआ नहीं लौटेगा | माधवदासजी विचार करने लगे कि अब मैं इससे नहीं कहूँगा कि मैं ही तेरा मधुआ हूँ, झूठ बोल देना चाहिए, जब मेरी माँ का ऐसा दृढ़ विश्वास है कि मेरे मधुआ को भगवान् की प्राप्ति हो गयी है और अब वह नहीं लौटेगा | माधवदास जी अपनी माँ के पाँव पकड़कर बोले –"मैया , सच बात है, मैं मधुआ नहीं हूँ, मैं नकली हूँ, तेरा मधुआ तो सच ही भगवान् को प्राप्त कर चुका है, अब वह कभी नहीं लौटेगा |" ऐसा कहकर उन्होंने अपनी माता को प्रणाम किया और बोले सच है अब मधुआ कभी नहीं लौटेगा, अपनी माता की वाणी मैं सच करके दिखाऊंगा, और जगन्नाथ पुरी चले गये | ऐसी माँ परम वन्दनीय होती है जो अपने बालक को सच्ची भक्ति की ओर निरन्तर प्रेरित करे |

☀ प्रभु की कृपा ☀

प्रभु कृपा करके सब आसक्तियों को लूट लेते हैं।

अन्धा आँख प्राप्ति को प्रभु की कृपा समझता है, गरीब धन प्राप्ति को प्रभु की कृपा समझता है, रोगी निरोग होने को प्रभु की कृपा समझता है; किन्तु ये सब धोखा है, ये सब प्रभु की कृपा नहीं है, प्रभु जिस पर कृपा करते हैं उसे अपनी शरण में ले लेते हैं और उस जीव की सब आसक्तियों को लूट लेते हैं, तब जीव एकमात्र प्रभु का आश्रय लेता है। यही प्रभु की सच्ची कृपा है।

भगवान् की कृपा और माया की कृपा; जीव पर ये दो कृपा होती रहती हैं। इन दोनों कृपाओं में बहुत अंतर है। माया जब खुश होकर कृपा करती है तो धन-दौलत, मान-सम्मान दे देती है। माया की कृपा से 'मैं-मेरा' के भाव जागृत हो जाते हैं। ध्रुव जी ने भगवान् से कहा –

सत्याऽऽशिषो हि.....अनुग्रहकातरोऽस्मान् ॥ (भा. ४/९/१७)

जब आप कृपा करते हैं तो धन आदि देने से पहले 'मैं-मेरा' की वृत्ति हटा देते हैं।

प्रभु ने सुदामा जी को धन तो दिया परन्तु देने से पहले उनमें 'मेरा-तेरा' की भावना बिल्कुल खत्म कर दी। भगवान् अपने भक्त का सदा भला चाहते हैं। नारद जी ने भगवान् को नारी-विरह का श्राप दिया परन्तु भगवान् ने नारद जी का कल्याण ही किया, उन पर रुष्ट नहीं हुए।

प्रभु की कृपा होते ही जीव के समस्त पाप व कष्ट मिट जाते हैं। अगर प्रभु की करुणा पाना चाहते हो तो अपनी 'अहंता' को निकाल दो।

एकमात्र सशक्त शक्ति 'भक्ति'

श्रीबाबामहाराज के पदगान (१२,५/३/२०२०) से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी गोविंदीजी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीमीराबाईजी का पदगान

भगवान् की कृपा को रोकने वाला आज तक संसार में कोई नहीं हुआ | बड़े-बड़े असुर हुए, वे भारतवर्ष में, ब्रजमंडल में बीमारियों का रूप बनाकर आये लेकिन कोई हानि नहीं कर पाये | हमें वही सोचना चाहिए, उसी निष्ठा में प्राण दे देना चाहिए लेकिन अपनी निष्ठा नहीं घटानी चाहिए | मीराजी कहती हैं - **हरि जू मोपे किरपा कीन्ही |** कृपा होती है, अवश्य होती है | कृपा हुई, मीराजी ने दिखाया, विष अमृत बन गया, बड़े-बड़े सर्प फूलों की माला बन गये | शूली की शय्या बड़ी सुखद शय्या बन गयी | मीराजी के सामने रोज मौत आती थी और मात खाकर चली जाती थी, उनको कोई मार नहीं पाया | अविश्वास और शंका से कल्याण नहीं होगा | कल्याण केवल प्रभु के विश्वास से होता है | सच्चा विश्वास करो | मीराजी कहती हैं कि भगवान् से झूठा प्रेम मत करो, उन पर अविश्वास नहीं करो | **सांचा से म्हारो साहब राजी, झूठा से मन भाग्यो रे |** लाक्षागृह की आग से पांडव बच गये और बाकी लोग मारे गये | मारने वाले सब मारे गये | हम भारतवर्ष के हैं, हम उस देश के हैं, जहाँ मरने के बाद अवश्य कहा जाता है – **राम नाम सत्य है, कृष्ण नाम सत्य है** | ये परम्परा बताती है कि चाहे जन्म हो चाहे मृत्यु हो, भगवन्नाम सत्य है बाकी सब असत्य है | डर से भाग करके अपने भजन को छोड़ना, उससे मृत्यु अच्छी है | अरे भाई, भागोगे तो भी ये शरीर जायेगा | ये कच्चे सूत का धागा है, कितनी भी इसकी रक्षा करो, एक दिन टूटेगा, उससे अच्छा है प्रभु का नाम, उन्हीं का विश्वास | हम उसे गायें, अपनाएं | इस शरीर का कोई भरोसा न है, न था, न होगा | संसार में बड़े-बड़े चक्रवर्ती राजा हुए लेकिन वे कुछ नहीं कर पाये | विरोधी विश्व विजय करने वाले रावण आदि भी कुछ नहीं कर पाये | कच्चे सूत का धागा कितनी देर रुकेगा | हम सबका शरीर विनाशी है | चाहे कितनी औषधि खा लो, सभी बड़े डॉक्टर मरते हैं | भागने से क्या शरीर बचेगा ? **आली काया रो कांई भरोसो, काचा सूत रो धागो रे |** ये शरीर कच्चा सूत है | ये कभी भी न रुका न रुकेगा | जब हिंदुस्तान-पाकिस्तान का बंटवारा हुआ था, उस समय एक-एक रेलगाड़ी हिन्दुओं की कटी लाशों से भरकर आती थी और उस समय भी जो बचने वाले थे, वे बच गये | प्रभु भरोसे चले तो आज वे भारत में बड़े-बड़े व्यापारी बन गये | उनके विश्वास ने उन्हें बचाया | कृष्णावतार में मीराजी एक सुहागिन के रूप में थीं लेकिन उनको श्यामसुन्दर से बोलने का मौका नहीं मिला | **पहल्या की मैं एक सुहागिन, हरि जू मुखड़े न बोल्या रे |** मीराजी कहती हैं कि कृष्णावतार में मैं थी किन्तु श्याम से मिलने का न तो मुझे मौका मिला और न ही उन्होंने प्रयत्न किया | क्या आश्चर्य है, कृष्णावतार के समय मीराजी एक सुहागिन गोपी के रूप थीं लेकिन श्याम से नहीं मिल पायीं, बोल नहीं पायीं जबकि द्वापर में साक्षात् रूप से कृष्ण उपस्थित थे किन्तु अब कलियुग में मीराजी अमर सुहागिन हुईं | इसलिये भगवान् की कृपा के सामने कलियुग कुछ नहीं है | इसी विश्वास पर हम लोगों को चलना चाहिए | आस्तिक बनो,प्रभु के नाम पर विश्वास से मर जाओ लेकिन विश्वास नहीं हटाओ | मीराजी ये संदेश दे रही हैं | कलियुग क्या करेगा ? **अब तो भई मैं सदा सुहागिन |** मीराजी कहती हैं कि द्वापर में मैं थी किन्तु कृष्ण से बोल नहीं पायी | अब कलियुग में सारा संसार मेरा विरोधी है, राणाजी ने जाने कितने प्रयत्न किये मुझे मारने के लिए लेकिन फिर भी मैं सदा सुहागिन बनी रही और श्यामसुन्दर मुझे मिले, कलियुग में मिले, द्वापर में नहीं मिले | चाहे कलियुग है चाहे रावण का युग हो, चाहे कंस का युग हो चाहे भारतवर्ष में अंग्रेजों का राज्य था, मुसलमानों का राज्य था, उस समय भी बड़े-बड़े भक्त हुए और उन्होंने भगवान् की भक्ति

से सारे देश को बचाया | कलियुग में ही तुलसीदासजी हुए, सूरदासजी हुए और मीराबाई हुईं इसलिए कोई भी समय भगवान् से बड़ा नहीं है | लाक्षागृह की आग से सब जल गये केवल पाण्डव बचे, यह प्रमाण है कि भगवान् का आश्रय सबसे बड़ा है | उनका आश्रय मत छोड़ो | इसलिए मीराजी ने गाया – **मोहे श्याम रंग ही लाग्यो री, म्हारे जियरो धोखो भाग्यो री |** जब श्याम रंग लगेगा तब तुम्हारे जिय का अविश्वास और धोखा भाग जायेगा | यह मीराजी का अनुभव है | दुनिया के अख़बार और टेलीविजन वाले ऐसी खबरें समाज में पहुँचाते हैं जिससे कि जनता के अंदर अविश्वास पैदा हो जाये | आजकल कोरोना वायरस के विश्वव्यापी आतंक को लेकर देश की मीडिया, अख़बार और टेलीविजन वाले ऐसी खबरें ही प्रसारित कर रहे हैं जिससे कि लोग भय से ग्रसित होकर आध्यात्मिक आस्था से विमुख हो जाएँ | भारत का कोई भी अख़बार या टेलीविजन वाला ऐसा संदेश नहीं प्रसारित करता कि अरे भारतीयों, तुम वही हो, जिस देश की भूमि ने भगवान् राम-कृष्ण को प्रकट किया इसलिए अपने आध्यात्मिक विश्वास पर अड़े रहो | इसी विश्वास ने मुस्लिम आतताइयों के बर्बर शासनकाल में भारत को बचाया | इस संसार से नास्तिक भी चले गये और भगवान् के भक्त भी गये लेकिन एक गया प्रभु के द्वार और एक गया यमराज के द्वार | इसलिए मृत्यु का स्वागत करो | डर कर भागने से कोई भी मृत्यु से नहीं बच सका | एक ही रास्ता है भगवान् की शरण में जाओ, उनकी याद करो | न कलियुग बड़ा है, न द्वापर बड़ा है | बड़ा है भगवान् का नाम | बहुत से लोग श्रीबाबा महाराज के पास आये और बोले कि कोरोना वायरस भारत में फ़ैल गया है | सरकार ने विदेश से आने-जाने वालों पर रोक लगा दी है, सरकार यह भी कह रही है कि भीड़भाड़ ख़त्म करो | महाराजश्री ने कहा कि ख़त्म तो सभी हो जायेंगे, भागने वाले भी हो जायेंगे और ताले में बंद होने वाले भी हो जायेंगे लेकिन बचेंगे वे ही जो केवल प्रभु का नाम लेने वाले हैं | **विनती हमारी सुन ले, करुणा पुकार है** – प्रभु के प्रति यही पुकार, यही उनकी स्मृति(याद), कोरना वायरस और अन्य सभी भीषण विपत्तियों से रक्षा कर सकती है | डॉक्टर और दवाइयाँ रक्षा नहीं कर सकते | जो क्षण प्रभु की याद में गुजर जाये, वही बढ़िया है | वही दिन, दिन है जो उनकी याद में बीत जाये | श्रीमद्भागवत में देवासुर संग्राम का वर्णन किया गया है | असुरों ने उस समय देवताओं के सामने अत्यंत भयानक मृत्यु का वातावरण प्रस्तुत कर दिया किन्तु इस समस्या के निदान हेतु इस दिव्य श्लोक का उद्घोष किया गया - **हरिस्मृतिः सर्वविपद्विमोक्षणम्** – भगवान् का स्मरण करना ही अनंत विपत्तियों से छुड़ाता है | श्रीकृष्णोपासना सब नियमों को, विधानों को तोड़कर चली है और उसमें शंका करना कि ये हो जाएगा, वो हो जाएगा, संसार बदनाम कर देगा, मर्यादा नष्ट हो जायेगी, ये सब बातें डरपोक लोग सोचते हैं, भक्त लोग नहीं सोचते | भक्त लोग बड़े वीर होते हैं | वे जानबूझकर इन मर्यादाओं को तोड़ते हैं और उसका परिणाम अच्छा होता है लेकिन समय लगता है | निष्ठा में परीक्षा होती है | भागवत में श्लोक आता है –

"क्वेमाः स्त्रियो वनचरीर्व्यभिचार दुष्टा : |"

ऐसा शब्द संसार में कहीं नहीं है, किन्तु यह भागवत में लिखा है कि कहाँ तो ये स्त्रियाँ जो व्यभिचार से दूषित हैं | यद्यपि इस व्यभिचार शब्द का अर्थ आचार्यों ने बदला है – **विगतः विचारः यस्मात् -** इस तरह करके अर्थ किया है लेकिन इस तरह के अर्थ इसलिए किये गए हैं ताकि कच्ची श्रद्धा के लोग बहक न जाएँ, अड़े रहें | हम तो यह समझते हैं कि जो अड़ा रहता है उसको अवश्य प्राप्ति होती है, गिरता है तो कोई बात नहीं, गिर जाओ | उठो, चलते रहो | एक बात करना चाहिए कि आलोचना नहीं करनी चाहिए, भक्तों से द्रोह नहीं करना चाहिए | जो चल रहा है, उसे चलने दो, गिर गया, गिरने दो | उठो, चलते रहो | **कृष्णे क्व चैष परमात्मनि रूढभावः -** भगवान् में रूढ़भाव होना चाहिए, पक्का भाव होना चाहिए | यह भागवत का श्लोक है | गोपियों ने कहा है –

क्वेमाः स्त्रियो वनचरीर्व्यभिचारदुष्टाः
कृष्णे क्व चैष परमात्मनि रूढभावः ।
नन्वीश्वरोऽनुभजतोऽविदुषोऽपि साक्षा-
च्छ्रेयस्तनोत्यगदराज इवोपयुक्तः ॥

(श्रीमद्भागवतजी१०/४७/५९)

अविद्वान, जो तत्व को नहीं जानता है, चल रहा है बेचारा, निष्ठा नहीं है, उसका भी भगवान् कल्याण कर देते हैं जैसे अगदराज (अमृत) को गुस्से में पियोगे तब भी अमर हो जाओगे, श्रद्धा से पियोगे तब भी अमर हो जायोगे, खीझकर पियोगे तब भी अमर हो जाओगे, अश्रद्धा से पियोगे तब भी अमर हो जाओगे | इस श्लोक का यह अर्थ नहीं है कि कोई निष्ठा वाला ही अमर हो जाएगा | चलते रहो, चलते रहो | मार्ग कुछ मत छोड़ो, बस कल्याण हो जाएगा तुम्हारा और हो ही रहा है | लडकियां व्यासगद्दी पर बैठें, इसका बहुत विरोध हुआ | बड़े-बड़े आचार्यों ने विरोध किया | अब वे ही लोग शांत हो गए हैं क्योंकि उनका विरोध चल नहीं पाया | चल इसलिए नहीं पाया क्योंकि भगवान् रक्षक हैं |

तुलसी अपने राम को रीझ भजो चाहे खीझ |

कैसे भी चलो | भक्तों की आलोचना नहीं करो, द्रोह नहीं करो, भाव रखो, अवश्य तुम्हारी विजय होगी | इसी को निष्ठा कहते हैं | **"निःशेषेण तिष्ठति इति निष्ठा"** निःशेष (सर्वात्म) भाव से जो गड़ गया, उसको निष्ठा कहते हैं | भक्तमाल में कथा है वारमुखी (वेश्या) की, भक्तमाल को मानना चाहिये, जो भक्तमाल को नहीं मानता है तो उसको भक्ति नहीं मिलेगी | **बिना भक्तमाल भक्तिरूप अति दूर है |** ऐसे लोग हैं जो कथा भी कहते हैं लेकिन उनमें आलोचना-प्रत्यालोचना बहुत है | वे स्वयं भक्ति की बात को नहीं समझते हैं | भक्तमाल में एक वेश्या की कथा है | वेश्या समाज में तिरस्कृत होती है | उसका कोई आदर नहीं करता है | सभी लोग उसे ठुकराते हैं | किसी में साहस नहीं है कि वेश्या को गले लगावे | एक बार वेश्या के यहाँ कुछ सन्त पहुँच गए | टीकाकारों ने इसे अलग ढंग से लिखा है | अपने-अपने मत हैं | कोई कुछ कहता है, कोई कुछ कहता है | वे सन्त निष्ठावान थे | वह वेश्या बड़ी संपन्न थी | उसके महल में एक बढ़िया बगीचा था | वेश्या गान कला में बहुत कुशल थी, उसका संगीत सुनने के लिए बड़े-बड़े राजा-रजवाड़े आते थे | एक बार कुछ सन्त अपना टोल लेकर जा रहे थे, रास्ते में उन्होंने बढ़िया बगीचा देखा तो वहाँ पहुँच गए और उन्होंने आपस में कहा कि यहाँ तो पानी आदि की बड़ी सुविधा है, स्नान की सुविधा है और यहाँ इतने अधिक वृक्ष हैं इसलिए यहीं पर सत्संग जमने दो | अब तो उस बगीचे में सत्संग जम गया और कीर्तन शुरू हुआ | वे सन्त निष्ठावान थे | उधर अपने झरोखे में से वेश्या ने देखा तो सोचने लगी कि अरे, ये सन्त मेरे स्थान में कैसे आ गए, मैं तो बड़ी बदनाम वेश्या हूँ | इन संतों को धोखा हो गया है | वेश्या वहीं पहुंची जहाँ सन्त लोग कीर्तन कर रहे थे | कोई संस्कार था उसका, वह संतों का कीर्तन देखती रही | भगवन्नाम में आनंद तो है ही | वेश्या महंत जी के पास गयी और उनसे पूछा- "महाराज, मैं वेश्या हूँ, बड़े-बड़े राजा-रजवाड़े मेरे पास आते हैं | आप लोग मेरे स्थान पर कैसे आ गए, मुझे आश्चर्य लगता है | मैं आपकी सेवा करना चाहती हूँ, क्या आप मेरी सेवा स्वीकार करोगे ?" सन्त बोले – "अवश्य तुम्हारी स्वीकार करेंगे, तुम्हारे हृदय में भाव आया है चाहे तू बदनाम वेश्या है लेकिन भगवान् तो पतितोद्धारक हैं | भगवान् के यहाँ कोई भेद नहीं है |" सन्त जी ने पूछा – "तू क्या सेवा करना चाहती है ?" वेश्या बोली -"आप बताइये, कुछ कह दीजिये | मेरे पास अपार धन है |" सन्त बोले- "तू हमारे ठाकुर जी की सेवा कर दे | ये सर्वसमर्थ हैं | साधु लोग तो सभी विधानों में बंधे हैं | साधु तो तेरा धन लेने से मना करेंगे क्योंकि तू शहर की बदनाम वेश्या है किन्तु ठाकुर जी मना नहीं करते हैं | इनके तू मुकुट और अन्य आभूषण बनवा दे | ठाकुर जी सबको तार देते हैं |" वेश्या बोली – "जब तक मैं आभूषण बनवाऊं तब तक आप यहीं रुके रहिये |" संत बोले – "जब तक तू आभूषण बनवाकर नहीं लाएगी, हम लोग यहीं रुके रहेंगे, तेरे बगीचे में कीर्तन करेंगे |" वेश्या आभूषण बनवाने में लग

गयी तब तक सन्त लोग बराबर उसके बगीचे में कीर्तन करते रहे | उस कीर्तन को सुनने से उस वेश्या की बुद्धि शुद्ध हो गयी | समुद्र के ऊपर पड़ी हुई हिमालय के ऊपर पहुँच गयी | जब सभी आभूषण बन गए तो वेश्या उन्हें लेकर संतों के पास आई और बोली – "महाराज ! ठाकुर जी के गहने बन गए हैं |" सन्त अच्छे थे, विश्वासी थे, निष्ठावान थे | उन्होंने कहा – "देवी ! गहना ठाकुर जी का है, तूने इनके लिए बनवाया है अतः तू अपने आप इनके पास जाकर अपने हाथों से ही इन्हें सब आभूषण पहना दे | भगवान् की क्या लीला है, जैसे ही वेश्या ठाकुरजी को आभूषण पहनाने चली, देहरी पर पाँव रखा, उसी समय उसको मासिक धर्म हो गया | पाप अनेक रूप धरके बाधा देता है लेकिन उससे डरो मत, चलते रहो | उसकी ओर चलो जो पतितपावन है, अनंत पापों को वह जला देगा | एक दो जन्म के पाप नहीं, अनंत जन्मों के पाप जल जायेंगे किन्तु उस वेश्या को तो अब शंका हो गयी | उसने कहा – "गुरुदेव ! मैं अब अशुद्ध हो गयी हूँ अतः ठाकुरजी को आभूषण नहीं पहना सकती हूँ |" गुरुदेव भी चुप रहे, सब संत सुन रहे थे | अब ऐसी अवस्था में यदि कह दें कि तू ठाकुरजी को आभूषण पहना दे तो साधू समाज उन्हें बहिष्कृत कर देगा | तब भगवान् ने ही स्वयं मूर्ति रूप से कहा – "तू संकोच मत कर, मुझे आभूषण पहना दे |" यह सच घटना है क्योंकि भक्तमाल में लिखी है | जिसको भक्तमाल के छंदों में श्रद्धा नहीं है, उसे भक्ति नहीं मिलेगी | अब भगवान् के आदेश से वेश्या उसी अशुद्ध अवस्था में उनकी मूर्ति के पास पहुँची और उन्हें आभूषण धारण कराया जबकि मासिक धर्म होना अपवित्रता की पराकाष्ठा है किन्तु उस वेश्या की उसी अशुद्ध अवस्था में ठाकुरजी ने उसके द्वारा आभूषण पहना | न कोई मर्यादा रही, न कुछ बंधन रहा | ऐसी एक नहीं, सैकड़ों कथाएं हैं | इसलिए हिचकिचाना नहीं चाहिए | सब लोग भक्ति के मार्ग पर चलो, बढ़ते चलो, भगवान् कृपा करता है | हम पतित हो जायेंगे तब भी उसका नाम पतितपावन है | यही नाम है भगवान् का | हम जैसे पतितों को पवित्र करने वाला भगवान् ही पतितपावन होता है | ये सब शब्द जो आये हैं, इनका क्या अर्थ है, इस पर विचार करो, विचार करके साहस करो, साहस करके बढ़ते चलो बस | संसार के भय, मर्यादा – इन सबको छोड़ दो | शंकाएं जो होती हैं, ये हमारे पाप हैं जो शंका कराते हैं |

भगवान् तीन तरह से कृपा करते हैं

एक कृपा साक्षात् दर्शन देकर करते हैं, दूसरी कृपा मन से मंगल चाहकर करते हैं, जैसे कि अनेक निमित्त बना देना, बिना किसी प्रयत्न के कार्य बना देना और तीसरी कृपा संस्पर्श से करते हैं; जैसे मछली अण्डे को दूर से देखती है और उसका पालन करती है। कछुआ दूर से ही अपने अण्डे का चिंतन करता है, इसी से अण्डे का पालन होता है और वह बढ़ता है।

सूर्य कभी नहीं पूछता कि अन्धकार कितना पुराना है? अन्धकार आज का है या वर्षों पुराना है। सूर्य की किरणें तो अन्धकार के पास पहुँचते ही उसे मिटा देती हैं। ऐसे ही प्रभु की कृपा कभी यह नहीं पूछती कि सामने वाला कितना बड़ा पापी है?

अभयदायक 'गीता-ज्ञान'

श्रीबाबामहाराज द्वारा कथित 'श्रीमद्भगवद्गीता के सत्संग' से संग्रहीत
संकलनकर्त्री एवं लेखिका- साध्वी कृष्णप्रियाजी, मानमन्दिर, बरसाना

श्लोक – ३३

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं सङ्ग्रामं न करिष्यसि ।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥

यदि तुम इस धर्मयुद्ध को नहीं करोगे तब अपने धर्म को भी छोड़ोगे, तुम्हारा यश भी नष्ट हो जायेगा और तुमको केवल पाप ही पाप लगेगा | धर्म का पालन करना ही गीता सिखाती है, लड़ाई-झगड़ा करना नहीं सिखाती है | लड़ना धर्म के लिए है | हमें अपने धर्म का पालन करना चाहिए | जब बड़ा आदमी ही धर्म का पालन नहीं करता तो उससे पाप होता है | भगवान् ने कहा कि श्रेष्ठ पुरुष कौन है ? श्रेष्ठ पुरुष उसको कहते हैं जिसके कर्म से दूसरे लोग सीखते हैं | जो लोग आलस्य के कारण धर्म का पालन नहीं करते, वह गलत है,पाप है | हमें गीता पढ़कर भगवान् की आज्ञा मानकर परोपकारी बनना चाहिए | गीता पढ़कर भी जिसको स्वधर्म का ज्ञान नहीं हुआ तो उसका गीता पढ़ना व्यर्थ है | जैसे क्षत्रिय का धर्म है युद्ध करना(लड़ना), वैसे ही साधु का धर्म है भजन करना और कराना, मर्यादा पालन करना और कराना | यह हम लोगों का स्वधर्म है | उस स्वधर्म में जब हम आलस्य करते हैं तो वह गलत है, पाप है | धर्म छोड़ने से पाप लगता है –

श्लोक – ३५

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः ।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् ॥

महारथी लोग तुमको भय के कारण युद्ध से हटा हुआ मानेंगे, जिन लोगों की दृष्टि में तुम बहुत आदरणीय थे, अब उनकी दृष्टि में तुम छोटेपन को प्राप्त हो जाओगे| भगवान् अर्जुन से कहते हैं कि इससे अकीर्ति होगी और अकीर्ति मनुष्य को नरक की प्राप्ति कराती है | इसलिए तुमको युद्ध करना चाहिए | युद्ध न करने से तुम्हारा धर्म भी छूटेगा, कीर्ति भी समाप्त हो जाएगी और पाप भी प्राप्त होगा | जिसकी कीर्ति नष्ट हो जाती है, उसको पाप लगता है, लोग उसकी निंदा करते हैं – अरे, वह बड़ा लोभी आदमी था, बड़ा कामी था, बड़ा क्रोधी था | इसलिए इस प्रकार से निंदा करने का अवसर लोगों को क्यों प्रदान करते हो ? लोग कहेंगे कि अर्जुन बड़ा डरपोक था –

श्लोक – ३६

अवाच्यवादांश्च बहून् वदिष्यन्ति तवाहिताः ।
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ॥

तुम्हारे शत्रु लोग तुम्हारे बारे में बहुत-सी न कहने योग्य बातें कहेंगे, तुम्हारे सामर्थ्य की निंदा करेंगे, इससे अधिक दुःखदायक और क्या होगा ? भगवान् ने अर्जुन से कहा कि तुमसे शत्रुता रखने वाले लोग न कहने योग्य बहुत सी बातें तुम्हारे विरुद्ध कहेंगे जैसे कि ये पांडव जारज हैं, दूसरों की संतानें हैं, देवताओं से उत्पन्न हैं, सती से उत्पन्न नहीं हैं | ऐसी बातें तुम्हारे शत्रु लोग कहेंगे | कोई बालक अनुचित कार्य करता है तो लोग उसके मां-बाप की निंदा करते हैं | भगवान् अर्जुन से कहते हैं कि तुम्हारे शत्रु तुम्हारे सामर्थ्य की निंदा करेंगे, इससे अधिक दुःख की बात और क्या होगी

श्लोक – ३७

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥

युद्ध में मृत्यु होने पर तुम स्वर्ग प्राप्त करोगे और विजयी होने पर पृथ्वी का राज्य भोगोगे, इसलिए हे कुन्तीपुत्र ! युद्ध के लिए निश्चय करके उठ खड़े हो जाओ | युद्ध तो बहुत खराब चीज है, उसमें हजारों-लाखों लोग मारे जायेंगे तो इसका उत्तर देते हुए भगवान् अगले श्लोक में कहते हैं....|.....क्रमशः

माताजी गौशाला बरसाना में माननीय
मुख्यमंत्री श्री आदित्यनाथ योगीजी
गौ-चिकित्सालय का उद्घाटन करते हुए

RNI REFRENCE NO.1313397 / REGISTRATION NO.- UP BIL- 2017/72945 TITLE CODE UP BIL – 04953 POSTAL REGD NO. MTR 093/2018-20
स्वामी मानमन्दिर सेवा संस्थान के लिए प्रकाशक / मुद्रक एवं संपादक राधाकांत शास्त्री द्वारा gupta offset printers A-42 industrial area, new delhi से
मुद्रित एवं मानमन्दिर सेवा संस्थान गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र) से प्रकाशित